क़तरा-क़तरा दरिया

(ख़ुदग़र्ज़ दुनियादारी)

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन
सी-46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन
नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर-302006
दूरभाष : 0141-2213700, +91-9829018087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : दिसम्बर, 2018
ISBN : 978-93-88167-90-1
कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'
आवरण संयोजन : बोधि टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 120/-

QATARA-QATARA DARIYA (POETRY) by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

समर्पण

धरती माँ,

हर उस जीव,

दरिया व शजर को

जिसकी वज़ह से यह कायनात

ख़ूबसूरत, महफ़ूज़ व ख़ुशहाली से आबाद है

अनुक्रम

बहू की जुबानी	17
क्या वो मेरा ख़ून है	20
परम-बह्म क्या है	22
आख़िरी ख़्वाहिश	26
हम ऐसे क्यों हैं	29
इतना कुछ है तो	34
बहू के सपने	37
कविता का जन्म	38
ज़िन्दगी का फलसफ़ा	41
ईश्वर का अवतार	45
क़रिश्मा रिश्वत का	47
लोकतन्त्र की सियासत	49
अपाहिज कौन है	51
तरक़्क़ी-ए-ज़िन्दगी	53
यह भी कोई जीना है	54
किसान की जुबानी	56
हे! ईश्वर ऐसा कर दो	59
धरती माँ की पुकार	60
उन्नति की तलाश में	64
जानवरों में इन्सानियत	67
आम आदमी का महाभारत	69
भारत में महाभारत	71
ममता की महानता	76
मन का मैल	77
हमारा बेटा	79
विदाई गीत	81
माँ की ममता	83
रिश्तों का अहसास	85
गान्धारी की बेबसी	86
ग़रीबी की आत्म-कथा	88
वैश्या एक सम्पूर्ण औरत	92
मैं कौन हूँ	95
ममता की महिमा और महानता	99
अन्नदाता की दास्तान	103
नववर्ष की शुभकामनायें	107
विदाई की शुभकामनायें	110
शुभकामना सन्देश	113

ख़ुशहाल ज़िन्दगी के विज्ञान की पड़ताल करती रचनायें

यह जानना कम हैरतअंगेज नहीं है कि एक कवि लगभग तीन साल के अर्से में अपने डेढ़ दर्जन काव्य संग्रहों के साथ उपस्थित हो। अजय शर्मा के जब पहली बार एक साथ पाँच कविता संग्रह प्रकाशित हो कर सामने आये तो कहा जा सकता था कि ये कवि की शुरू से अब तक की कविताओं के संग्रह होंगे। लेकिन दो वर्ष के अन्तराल के बाद पुन: छह कविता संग्रह और इन छह के विमोचन के पश्चात् लगभग एक साल में ही सात और संग्रह सामने आना हमें रुक कर कवि के बारे में सोचने को विवश करता है। रचनात्मकता का ऐसा अजस्र प्रवाह सहज या सामान्य बात नहीं है। इतनी तीव्र गति से काव्य रचना कर पाना रचनात्मकता का विलक्षण स्वभाव है।

प्रकट काव्य रचनाओं के रचना या संरचना के पहलू पर विचार करने से पहले यह तो मानना ही पड़ेगा कि ये रचनाकार के अन्दर होने वाली तीव्र और सक्रिय रचना-प्रक्रिया का परिणाम है। अपने अन्तर में अर्न्तनिहित द्वन्द को रचनात्मक कृति में रुपान्तरित कर सकने का कौशल भी उल्लेखनीय है। रचनाकार के अन्दर होने वाली इतनी तीव्र हलचल के कारणों को यदि हम जानने की क़ोशिश करें तो इस अर्न्तद्वन्द के संकेत हमें इनके काव्य संग्रह से पूर्व दिये गये पूर्व कथन और रचनाओं में परिलक्षित होते हैं।

यदि हम अजय शर्मा के व्यापक काव्य संसार का कोई वलय बनाना चाहें या फिर कोई दोलन-पथ देखने का प्रयास करें तो यह हमें रूमानियत से चल कर, यथार्थ के द्वन्द,विसंगतियों और फिर से मुहब्बत की तलाश तथा किंचित आध्यात्मिक रूमान के झुकाव के पथ पर चलता जान पड़ता है जो सहज और स्वाभाविक है।

टूट कर प्रेम करने की स्थितियाँ, परिस्थितियाँ, विरह-मिलन की अनुभूतियाँ तथा इसी दौरान यथार्थ दर्शन के क्रम में संवेदनाओं का दायरा व्यक्तिगत से व्यापक

होता हुआ, परस्पर व्यवहारों, पारिवारिक सम्बन्धों व सामाजिक आचरणों की विसंगतियों को संस्पर्श करता है। जिसे अजय शर्मा ज़िन्दगी और दुनियादारी कहते हैं।

ज़माने की रस्मों और रिवायतों से शिक़ायत शायरी का पुराना मसला है-अजय शर्मा की शायरी भी इसमें मुब्तिला हो तो इसे अनहोनी नहीं कह सकते-किसी न किसी रूप में हर किसी की मज़बूरी, बेबसी, लाचारी का होना और उसके बरक़्स ज़िन्दगी गुज़ारना ही ज़िम्मेदारी है। समाज में व्याप्त आदर्श और यथार्थ की विसंगतियाँ जो व्यवहार में परिलक्षित होती हैं-अजय शर्मा अपनी कविताओं में उन्हें पहचानते हैं और वर्णित करते हैं।

कहने और करने का फर्क, कथनी और करनी का अन्तर, आचरण के इसी दोहरेपन को अजय शर्मा दुनियादारी कहते हैं दुनियादारी के और भी पहलू, आयाम हो सकते हैं। तथापि।

विसंगतियों, विकृतियों, पाखण्ड, दोहरेपन से भरे आचरण के व्यापक परिणामों पर अजय शर्मा की काव्य दृष्टि है-वे कई सामाजिक विषयों और परिलक्षित व्यवहारों तथा उनके परिणाम स्वरूप उत्पन्न कई समस्याओं को अपनी रचना का उपजीव्य बनाते हैं।

घर, परिवार, गृहस्थी, दाम्पत्य-जीवन, वृद्धजनों की विवशता, वृत्तियों, प्रवृत्तियों दोषादि, उनके परिणाम, अनैतिक, आपराधिक घटनायें, सामाजिक विषमता, प्रकृति, पर्यावरण, कुरीतियाँ, भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों को लेकर अजय शर्मा कई स्तरों पर उनकी पड़ताल अपनी रचनाओं में करते हैं। वे न केवल पर्यावरण, प्रकृति, विज्ञान अपितु आर्थिक (अर्थशास्त्र), प्रशासनिक (प्रबन्धन), सामाजिक विषयों के अर्न्तगत परिघटित घटनाओं का वर्णन-विश्लेषण करते जान पड़ते हैं।

इस काव्य संकलन में बहू की जुबानी, परम-ब्रह्म क्या है, बहू के सपने, कविता का जन्म आदि स्त्री विमर्श की कवितायें हैं। ज़िन्दगी का फलसफ़ा, लोकतन्त्र की सियासत, तरक़्क़ी-ए-ज़िन्दगी,आम आदमी का महाभारत जैसी कई कवितायें हैं जो सामाजिक यथार्थ और जीवन की विसंगतियों के चित्र प्रस्तुत करते हुये कई सवाल खड़े करती हैं।

नैतिकता,आर्दश,आपसदारी की कवितायें कई बार मिथकीय प्रसंगों और

चरित्रों के माध्यम से अपनी बात कहने की क़ोशिश करती हैं-'गान्धारी की बेबसी' ऐसी ही एक कविता है। समाज के दलित, शोषित, उपेक्षित वर्गों पर भी कवि अजय शर्मा की दृष्टि जाती है-वे निर्धनों, वैश्याओं, किसानों की व्यथा भी कहते हैं।

जैसा प्रारम्भ में उल्लेख किया गया, रूमानियत से प्रारम्भ हो कर सामाजिक जीवन के यथार्थ से गुज़रता हुआ अजय शर्मा का काव्य दृष्टि पथ, नैतिक आध्यात्मिक शुभेच्छाओं के साथ अपना वृत्त पूरा करता है। अजय शर्मा इस संकलन से पूर्व के काव्य संकलनों में अपनी छन्दोबद्व रचनायें प्रस्तुत कर विविध छन्द विधानों में अपनी पारगंतता दर्शा चुके हैं। इस संकलन की कतिपय रचनाओं को छोड़कर अधिकतर मुक्त छन्द की रचनायें हैं। ''काव्य संग्रह के शिल्प में कमियाँ और ग़लतियाँ हो सकती हैं। जानकार और इसे नज़र अन्दाज़ कर आम आदमी बन कर मेरे दिली जज़्बात और अहसास को मेरे निजी विचार के रूप में देखेंगे तो आपको चैन और सुक़ून मिलेगा।'' यह कहना है इस संकलन की रचनाओं के रचनाकार का।

ऐसा कौन पाठक होगा जो किसी संग्रह को पढ़कर चैन और सुक़ून खोना चाहेगा। हमारा इस राय से असहमत होने का कोई मतलब नहीं है इसलिये अपने चैन और सुक़ून के लिये इस संग्रह को उसी रूप में पढ़ना श्रेयस्कर है जैसा रचनाकार ने हमें सन्देशित किया है।

अजय शर्मा के सक्रिय रचनात्मक काव्याभ्यास के उर्जरित और काव्यगत लक्षणों से अधिक समृद्ध होने की शुभकामनाओं के साथ।

-अम्बिका दत्त चतुर्वेदी
न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा कोटा
मो.: 9460939123,9799110599

अभिमत

झील जैसे नीले नयनों में नज़ारा निराला है
गुलाबी गालों पर रसीले होठों का प्याला है
अंग-अंग और रोम-रोम प्यार में नशीला है
प्रेम के अहसास से जीवन एक मधुशाला है

कुछ इसी तरह के जज़्बात अजय शर्मा 'साथी' जहानवी के काव्य संकलनों में हैं। इनकी काव्य यात्रा का कल्पना लोक असामान्य है। वे मुहब्बत में गहरे पैठ कर लिखते हैं। मुख्य रूप से उनके कलाम में शहरी मध्यमवर्गीय जवान मुहोब्बतियों की आप बीती प्रेमालापी मालिकायें हैं। उनकी पोथियों में सबका केन्द्रीय विषय मुहब्बत या प्यार ही है। वे केवल प्रेम से अपनी रचनाओं की शुरूआत करते हैं और प्रेम पर विराम देते हैं, वो प्रेमी जो प्यार में ज़िन्दगी बिता देने को ही प्रतिबद्ध है फिर भी प्राथमिकतायें बदलते हैं, प्रेम को बीत जाने देते हैं। उनकी निग़ाह में इश्क़ एक नकचढ़े तिफ़्ल (बच्चा) की मानिन्द है, जब तक गोद में उठाये हुये दुलराते, हिलराते रहो तब तक ख़ुशियों के असबाब से मालामाल कर देगा लेकिन जैसे ही गोद से उतारो चिचियाने लगेगा, मिमियाने लगेगा और शर्मसार कर देगा आपको। 'साथी' अपने सहयात्री के बारे में कुछ ऐसा ही अपनी पुस्तकों में यहाँ-वहाँ बयाँ कर देते हैं।

जैसे मैंने अपने कथन में पूर्व में उनके कलाम का नमूना पेश किया है उसे पढ़ कर आपको लगा होगा कि वह अनेक बार दर्शन में खो जाते हैं, अनेक उपमान और उपमाओं का इस्तेमाल करते हैं, पूरी तरह डूब जाते हैं, खो जाते हैं, सराबोर हो जाते हैं, शब्द चमत्कार के फेर में उलझ जाते हैं लेकिन भटकते नहीं, बस यही उनकी लेखनी की विशेषता है। यहाँ मुहोब्बत के मैदान में उनकी प्रवृति पलायनवादी नहीं है। लौटकर आना ही प्रकृति का धर्म है। उनकी रचना धर्मिता में आपको कुछ नया नहीं लगेगा। कुछ अज़ूबा नहीं लगेगा वही जो कुछ समाज में गुज़रता आया है गुज़र रहा है और भविष्य में भी गुज़रता रहेगा। अगर मैं सच कहूँ तो बात दरअसल ये है कि आप

नया चाहते ही कब हैं। आपने तो उसे ही मक़बूल (लोकप्रिय) किया है जो आपकी अपनी बीती कह सके। इस बात को देखते हुये 'साथी' जहानवी अपनी बात कहने में सफल रहे हैं। वे प्यार की लजीज़ी और उसकी शुष्कता के पैमाने को समान रखते हुये अपनी कविताओं को अन्ज़ाम तक पहुँचाने में सफल रहे हैं। कविताओं का प्रवाह लहलहाते चमन में खिले फूलों की ख़ुश्बू में लिपटा हुआ एक मंज़र सा लगता है जिसमें ख़रामा-ख़रामा (धीरे-धीरे) गुज़रने को दिल करता है। कहीं किसी प्रकार की जल्दी, ऊब कर निकलने को जी नहीं करता। कविताओं में प्रेम के अलावा भी समाज है, रिश्ते हैं, प्रकृति है,पूरी कायनात है, मिलन और बिछोह है, तिरस्कार है, तक़रार है, समर्पण है, शीत ऋतु की ताज़गी है, ग्रीष्म की चिलचिलाहट ये सभी घटक मिलकर पुस्तक के कलेवर को पठनीय बनाने में सहायक सिद्ध हुये हैं।

यह बहुत बड़ी बात है कि आज के इस दौर में प्यार पच ही कहाँ पाया है। उस पर विकराल काल की गहरी छाया है कि 'साथी' जहानवी ने इस तिजारती(पूँजीवादी) युग में भी उसे सहेज कर रखा है। ये श्लाघनीय(प्रसंशनीय) है। आस-पास की दुनिया से उठाये हुये इनके बिम्ब। लगता है जैसे सब सुने हैं, देखे हैं, अनुभव किये हैं। वही प्रेम की चालबाज़ियाँ, बेवफ़ाई, इज़हारे मुहब्बत, ख़ुद को कोसना, ख़त, आँसू, सब-कुछ वैसा का वैसा जो आप महसूस करते हैं, आपसे अलग नहीं। दिल को रूमानियत की ख़ुराक देनी है तो पढ़िये 'साथी' के कलाम।

अन्त में आप पायेंगे कि वे इस इश्क़ के दरिया में, उसकी अतुल गहराई में डूब कर जाना चाहते हैं जहाँ दरिया की लहरों के बाद एक सख़्त ज़मीन भी है जहाँ वे अपने को स्थाई रूप से अडिग हो कर खड़ा होना चाहते हैं। बक़ौल ग़ालिब:-

ये इश्क़ नहीं आसाँ, इतना तो समझ लीजे
इक आग का दरिया है, और डूब के जाना है।

आपका अपना

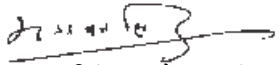

-भगवत सिंह जादौन 'मयंक'
(सेवानिवृत व्याख्याता एवं वरिष्ठ साहित्यकार)
346, लक्ष्मण मार्ग, सरस्वती कॉलोनी, खेडली फाटक, कोटा-324001
मो. : 9414390988, 9057579203

दिली गुफ़्तगू

(जज़्बात-ए-साथी)

11 जनवरी 2015 को एक साथ पाँच काव्य संग्रहों बेगुनाही के सुबूत, सहरा में शजर, समन्दर में बारिश, सावन में पतझड़, कैंसर के पाँचवें हालात और website www.xyzsathi.com और दिनांक 16 अप्रैल 2017 को एक साथ छह रूमानियत काव्य संग्रह ओह! मेरे मधुर प्यार, विरह की वेदना, दिल की पुकार, मुहब्बत एक शजर का फलसफ़ा, मन का संसार और बेजुबान तसव्वुर के मंजरे आम (विमोचन) के बाद अब एक साथ सात काव्य संग्रह जिसमें से पाँच रूमानियत काव्य संग्रह तन्हाई के तसव्वुर, मुहब्बत एक ईबादत, ख़ामोश निग़ाहें, जुदाई के जज़्बात, मुहब्बत का साया और दो सामाजिक काव्य संग्रह अमावस का चाँद और क़तरा-क़तरा दरिया आपकी नज़र कर रहा हूँ।

कोई कहता है कि ज़िन्दगी प्यार का गीत है, कोई कहता है कि ज़िन्दगी ग़मों का सागर है जिसे हर हाल में पीना ही पड़ेगा,कोई कहता है कि ज़िन्दगी को धुएँ में उड़ाता चला गया। आज तक आख़िर मैं यह समझ नहीं पाया कि ज़िन्दगी और दुनियादारी है क्या। कोई मोह माया में जकड़ा है तो कोई परिवार मोह में जकड़ा हुआ है। आम आदमी किसी न किसी मोह में जकड़ा हुआ है चाहे उसमें उसका स्वार्थ हो या नहीं हो। आम आदमी आज किसी न किसी रूप में बेबस, लाचार और मज़बूर है। कोई आर्थिक रूप से मज़बूर है तो कोई शारीरिक रूप से लाचार है यानि कि कोई भी इन्सान दुनियादारी की वज़ह से ज़िन्दगी में सन्तुष्ट नहीं है। एक इन्सान के कई रूप होते हैं उसे न चाहते हुये भी वह सब कुछ करना पड़ता है जो वह दिल से नहीं करना चाहता है। यानि कि वह इतना मज़बूर होता है कि उसे अपनी आत्मा को कई बार मारना पड़ता है।

इस ज़माने में दुनियादारी निभाने की वज़ह से बहुत कुछ ग़लत होता रहता है जिसे हम सब देखते और सुनते रहते हैं। यह सब-कुछ देखकर, सुनकर और सहकर जब भी मन दुखी होता है तो मैं बेचैन हो जाता हूँ और अपनी इस बेचैनी को ही लिख

लेता हूँ जो कि इन काव्य संग्रहों के रूप में आपके सामने है। मुझे नहीं पता कि गीत, कविता और ग़ज़ल क्या होती है मुझे तो सिर्फ़ इतना मालूम है कि मेरी पंक्तियाँ आपको कुछ सोचने और समझने के लिये मज़बूर करें और आप ज़िन्दगी में दुनियादारी का आईना देख और समझ सकें कि यह दुनियादारी और ज़िन्दगी है क्या ?

हर कोई मोक्ष और वैराग्य की सिर्फ़ बातें करता ज़रूर है मगर उस तरह का व्यवहार अपनी ज़िन्दगी के सफ़र में नहीं करता। इस विरोधाभास का नाम ही दुनियादारी है। इस ज़माने में इस तरह के हालातों से रोज़ाना वास्ता पड़ता है। जैसे असहाय बुर्जुग माता-पिता वृद्धाश्रम में साधन सम्पन्न बेटों के होते हुए भी यतीमों की तरह नर्क का जीवन जी रहे हैं तो कोई भीख माँगकर फुटपाथ पर जर्ज़र हालात में गुज़र बसर कर रहा है।

कभी कई पति पत्नी में विवाद इतना बढ़ जाता है कि तलाकशुदा का नर्क जैसा जीवन जी रहे हैं तो कोई शादी और परिवार को बन्धन मान कर सिर्फ़ 'लिव इन रिलेशन' की तरह रह रहा है तो कोई अपना सुक़ून समलैंगिक सम्बन्धों में खोज रहा है। हर रोज छेड़खानी और बलात्कार की घटनायें आम बात हो गई है। आज बहू-बेटियाँ घर परिवार में भी सुरक्षित नहीं है। अपने ही इनके साथ ऐसा बुरा व्यवहार कर रहे हैं कि बहू-बेटियाँ सदमे में गुज़र बसर कर रही है। कुछ बेटियों को तो कोख़ में ही मार दिया जाता है। एक इन्सान की इससे ज़्यादा हैवानियत और क्या हो सकती है। ना कुछ बात पर पड़ौसी एक-दूसरे से ईर्ष्या और रंजिश रखते हैं जबकि एक पड़ौसी ही मुसीबत में सबसे पहले काम आता है। धन सम्पत्ति के विवाद में भाई-भाई एक-दूसरे के दुश्मन होकर ख़ून के प्यासे हो जाते हैं। आजकल के बच्चों में अब पहले जैसे संस्कार भी नहीं रहे नि:सन्देह समाज के ऊपर टी. वी. और मोबाईल का ऐसा दुष्प्रभाव है कि हर कोई इन्सान हैरान और परेशान है।

आधुनिक जीवन शैली में हर इन्सान की आवश्यकतायें इतनी ज़्यादा बढ़ गई है कि उसके साधन कम पड़ जाते हैं तो अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये ऋण के दुश्चक्र में ऐसा फँस जाता है कि किस्तों की ज़िन्दगी जी कर कर्ज़ के बोझ तले दबकर मरने को मज़बूर हो जाता है ऐसा सब-कुछ दिखावे की दुनियादारी की वज़ह से हो रहा है। आधुनिक भोग विलास के साधन इतने ज़्यादा महँगें हैं कि आम आदमी को कर्ज़ के दलदल में फँसना ही पड़ता है।

वर्तमान परिवेश में आम आदमी की जीवन शैली बिना शारीरिक श्रम के इतनी ज़्यादा आरामदायक हो गई है जबकि उसका खान-पान और रहन सहन ऐसा हो रहा है कि उसे कई लाइलाज़ बीमारियाँ हो जाती है जिससे वह सारे जीवन के लिये रोगी हो जाता है। प्रकृति से उसकी दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं इस वज़ह से वह शारीरिक और मानसिक रूप से रोगी होता जा रहा है। वातावरण इतना ज़्यादा प्रदूषित हो गया है कि हवा और पानी ज़हरीले हो गये है जबकि बिना हवा पानी के जीवन मुमक़िन नहीं है। खाने पीने की वस्तुओं में मिलावट इतनी ज़्यादा बढ़ गई है कि कैंसर जैसी कई गम्भीर बीमारियाँ आम इन्सान के लिये आम बात हो गई है। ध्वनि प्रदुषण से आम आदमी मानसिक रोगी हो गया है।

इन्सानों ने प्रकृति का इतना ज़्यादा अन्धा धुन्ध दोहन कर लिया है कि प्रकृति में असन्तुलन पैदा हो गया है। वातावरण इतना ज़्यादा ख़राब हो गया है कि मौसम का सन्तुलन भी बिगड़ गया है जिससे बाढ़, भूकम्प, सूखा और तूफ़ान के गम्भीर हालात पैदा हो रहे हैं। मौसम चक्र के बिगड़ने से प्रकृति के समस्त जीव जन्तुओं पर गम्भीर परिणामों से अत्यधिक नुकसान हो रहा है।

समाज में रिश्वत, भ्रष्टाचार, जातिवाद, छुआछूत, भेदभाव, भाई भतीजावाद, आरक्षण, नौकरशाही, राजनीति, धनबल, बाहुबल, भ्रूण हत्या, आतंकवाद, घोटाले इत्यादि अपराध अब इस अवस्था में पहुँच गये हैं कि कैंसर की तरह लाइलाज हो गये हैं जिससे समाज और देश को इतना ज़्यादा नुकसान हो रहा है कि सामाजिक और सरकारी व्यवस्थायें बद से भी बदतर हालात में पहुँच गई हैं।

भारत कृषि प्रदान देश है यहाँ की अधिकतर जनसंख्या कृषि पर आधारित है मगर सरकार की बेरुखी की वज़ह से खेती करना अब इतना ज़्यादा महँगा और नुकसानदायक होता जा रहा है कि आम किसान कर्ज़ के दलदल में फँसा हुआ है कई किसान तो इस वज़ह से आत्महत्या कर चुके हैं। किसान को अपनी फसल का उचित मूल्य नहीं मिलने से उसके परिवार का पेट पालना अब मुश्क़िल होता जा रहा है। इस लिये अब किसान खेती की बज़ाय मेहनत मज़दूरी करने को विवश है। गाँव में रोजगार नहीं होने की वज़ह से गाँव उजड़ रहे हैं और शहरों में जनसंख्या का अत्यधिक घनत्व होने की वज़ह से भेड़ बकरियों की तरह से इन्सान शहरों में रहने को मज़बूर हैं।

इस तरह जो असन्तुलन पैदा हो रहा है वह देश की अर्थ व्यवस्था के लिये अत्यधिक घातक है।

भारत देश में आर्थिक असन्तुलन भी बहुत ज़्यादा बढ़ गया है। अस्सी प्रतिशत लोगों के पास सिर्फ़ बीस प्रतिशत सम्पदा है। अमीरी गरीबी की खाई इतनी ज़्यादा बढ़ गई है कि कुछ धन कुबेरों का देश की तीन चौथाई अर्थ व्यवस्था पर कब्जा है जो किसी भी समाज और देश के लिये अत्यधिक घातक है। देश में बेरोजगारी इस हद तक बढ़ गई है कि नौजवान अपराधिक गतिविधियों में बहुत गहरे स्तर तक लिप्त होते जा रहे हैं जिससे लूटपाट और हत्या जैसे अपराध आम बात हो गई है।

पुलिस व कानून व्यवस्थायें इतनी लचर है कि अपराधियों के हौंसले इतने बुलन्द है कि बड़े से बड़े अपराधों को भी सरे आम अन्ज़ाम देते हैं और बेख़ौफ़ शान से विचरण करते है जिससे आम आदमी दहशत में गुज़र बसर करता है। शिक्षा सिर्फ़ नौकरी प्राप्त करने का माध्यम भर रह गई है। शिक्षा में से नैतिक शिक्षा और संस्कार लुप्त होते जा रहे हैं। जिससे भावी पीढ़ी समाज और देश के लिये गैर जिम्मेदार होती जा रही है। वैसे भी शिक्षा अब इतनी ज़्यादा महँगी हो गई है कि आम आदमी के लिये लोहे के चने चबाने जैसे है। आज का युवा इतना ज़्यादा भ्रमित है कि उसे समझ नहीं आता कि वह क्या करे। कई युवा तो मानसिक रोगी हो कर आत्म हत्या तक कर लेते हैं।

समाज में महिलाओं और बेटियों की दशा बद से बदतर होती जा रही है। उनके साथ भेदभाव और सौतेला व्यवहार किया जाता है जब तक महिलाओं और बेटियों का विकास नहीं होगा तब तक देश और समाज का विकास सम्भव नहीं होगा। आज का युवा पश्चिम संस्कृति से इतनी बुरी तरह से प्रभावित है कि उसका पहनावा और रहन-सहन समाज के लिये बहुत ज़्यादा हानिकारक है। प्रतिभावान युवाओं को देश में उचित अवसर नहीं मिलने की वज़ह से कुशल प्रतिभा देश के बाहर चली जाती है जिससे देश का सम्पूर्ण विकास नहीं हो पाता है। जातिवाद का सर्प समाज को काले नाग की तरह से डस रहा है। छुआछूत से सामाजिक भेदभाव उत्पन्न हो रहे हैं जिससे समाज में एक दूसरे के प्रति रंजिश, घृणा और नफ़रत की आग से देश और समाज जल रहा है।

काव्य संग्रहों के शिल्प में कई कमियाँ और ग़लतियाँ हो सकती हैं जानकार और समझदार इसे नज़र अन्दाज़ कर, एक आम आदमी बनकर मेरे दिली जज़्बात और अहसास को मेरे अपने निजी विचार के रूप में देखेंगे तो आपको चैन और सुक़ून मिलेगा। दिल से किये गये काम में कुछ भी अच्छा बुरा नहीं होता सिर्फ़ और सिर्फ़ दिल की आवाज़ होती है जो अच्छी हो या न हो यक़ीनन बुरी तो नहीं होती। इन रचनाओं को इस सन्देश 'मेरा पैगाम अहले मुहब्बत है जहाँ तक पहुँचे बहुत पहुँचे' के रूप में देखा जाये।

इन काव्य संग्रहों के मुक़म्मल होने में जो योगदान श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक' और श्री शम्भू दयाल विजयवर्गीय ने दिया है उसके लिये मैं उनका बेहद शुक्रगुज़ार हूँ। बेशक़ीमती अभिमत के लिये श्री विष्णु शर्मा 'विष्णु', श्री रामेश्वर शर्मा 'रामू भैया', श्री अम्बिका दत्त चतुर्वेदी, श्री जितेन्द्र 'निर्मोही', जनाब शकूर अनवर, श्री महेन्द्र 'नेह', श्री अरविन्द सोरल का तहेदिल से शुक्रिया अदा करना मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ। शायरी को बेब साइट www.xyzsathi.com पर भी पढ़ा जा सकता है।

इस अश्आर के साथ अपनी गुफ़्तगू को ख़त्म करता हूँ।

मुझे दुनियादारी का सिर्फ़ इतना सा तो ज्ञान है
मुहब्बत ही ख़ुशहाल ज़िन्दगी के लिये विज्ञान है।

तहेदिल से आपका अपना

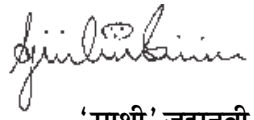

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)
आम आदमी के जज़्बात का शायर

प्रथम मंजिल, दीपश्री भवन
मल्टीपरपज स्कूल के सामने, गुमानपुरा कोटा 324007
मो. : 9414227447, 9214427447

बहू की ज़ुबानी

कुएँ से पानी निकालने के लिये
मैं रस्सी से बँधा एक बर्तन हूँ
जिसने भी चाहा, जितना चाहा
जब चाहा मेरा उपयोग किया
सम्बन्धों की दुहाई देकर
पति-देवर, सास और ससुर ने
जेठ-जेठानी, ननद और बच्चों ने
अपने मन का सब कुछ करवाया।

क्योंकि मैं एक बहू हूँ
जो रिश्तों की डोर से बँधी हूँ
और कुआँ मेरा ससुराल है।
जिसकी मज़बूत दीवारें
मेरे जज़्बातों के पत्थर से बनी हैं
जिसमें मेरी सिसकियों की
सीमेंट और रेत लगी हुई है
तब जाकर ज़माने में
कुएँ की कुछ आबरू बची है।

जैसे कुएँ के पानी की
गहराई को नापा जाता है
वैसे ही मेरे नेक इरादों को

कर्तव्य की कसौटी पर
सोच समझकर परखा जाता है।

पानी का जैसे परीक्षण होता है
वैसे ही मेरे आचरण और
व्यवहार का निरीक्षण होता है
तब मेरे गुण दोष का निर्धारण होता है
तब जाकर मुझ पर कुछ भरोसा होता है।

कुएँ की दीवार से टकराकर
मेरी ख़्वाहिशें दम तोड़ देती हैं
मेरी जायज़ तमन्नाओं का
गला घोंट दिया जाता है
अपनी मर्ज़ी से बोल नहीं सकती
अपनी इच्छा से सोच नहीं सकती
अपना चाहा सुन नहीं सकती
अपने स्वाद का कुछ खा नहीं सकती
अपने काम से आ जा नहीं सकती
अपनी मर्ज़ी का वो कुछ भी नहीं कर सकती
क्योंकि मैं रस्सी से बँधा बर्तन हूँ
जो बिना सहारे कुएँ से
बहार कैसे आ सकती हूँ
क्योंकि मैं एक बहू हूँ
और कुआँ मेरा ससुराल है।

अपने दायरे से बाहर निकल कर
जाती तो कहाँ जाती
बाहर ज़माने की बंजर ज़मीन पर

रस्मो-रिवाज़ की फ़सलों को
रिश्तों के बन्धन में बँध कर
कैसे और कहाँ तक सींचती
क्योंकि मेरे साधन सीमित थे
क्योंकि मैं रस्सी से बँधा बरतन हूँ
क्योंकि मैं एक बहू हूँ
और कुआँ मेरा ससुराल है।

भले ही यह मेरा क़ुसूर न होता
अगर मेरी कोख से
बच्चा पैदा नहीं होता
बहुत मुश्क़िल से बेटी का जन्म होता
एक तरफ खाई तो दूसरी तरफ कुआँ होता
अन्धेरे कुएँ से तो मैं किसी के सहारे से
बाहर भी आ जाती
मगर गहरी खाई में मेरा क्या होता
मेरी चीख पुकार को कौन सुनता
अब तो मैं रस्सी से बँधा बर्तन भी नहीं रही
और कुआँ मेरा ससुराल भी नहीं रहा।

क्या वो मेरा ख़ून है

मैं पूरे ऐतबार के साथ
यह कहता हूँ कि
मेरी पत्नी की कोख से
जिसने जन्म लिया है
वो मेरे वासना रूपी
प्यार का प्रतीक है।
असल में वो मेरी पत्नी का ख़ून है
जिसने नौ महीने कोख में रखकर
तमाम परेशानियाँ सहन कर
उसे वो सब कुछ दिया है
जो ज़िन्दा रहने के लिये ज़रूरी है।

ज़मीन की उर्वरा शक्ति से ही
बीज पौधा बनता है
ज़मीन के पोषण से ही
पौधा पेड़ बनता है।
बिना ज़मीन के शजर
सूखी लकड़ी के समान है
वैसे ही बिना माँ के बच्चे की कल्पना
साकार नहीं हो सकती।
यक़ीनन मैं दावे के साथ
यह कह सकता हूँ कि

वो मेरा ख़ून नहीं है
क्योंकि मैं माँ और ज़मीन नहीं हूँ
मैं तो महज़ एक पुरुष बीज हूँ
जो बिना किसी ज़मीन के
अंकुरित जीव नहीं बन सकता।

परम-ब्रह्म क्या है

सिर्फ़ रचनाकार ही परम-ब्रह्म नहीं है
वो हर एक कलाकार परम-ब्रह्म है
जो अपनी कला से उत्कृष्ट सृजन करता है
वो कुम्हार भी परम-ब्रह्म है
जो मिट्टी को अनमोल कर देता है
वो जुलाहा भी परम-ब्रह्म है
जो कपास से सुन्दर वस्त्र बनाता है

वो लुहार भी परम-ब्रह्म है
जो लोहे को मन चाहा आकार दे देता है
उस किसान को क्या कहोगे
जो हर मौसम के कष्ट सहता है
फिर भी सारी सृष्टि का पेट पालता है
असल में किसान ही परम-ब्रह्म है

उस नारी की तो महिमा ही न्यारी है
जो नौ महीनों तक अपनी कोख में
कष्ट सहकर उस जीव का सृजन करती है
जिसके बिना सृष्टि का निर्माण सम्भव नहीं है

इस संसार में और भी परम-ब्रह्म हैं
जैसे वो अभागी व प्रताड़ित वैश्यायें हैं

जो मनुष्य की अतृप्त शारीरिक इच्छायें व
मानसिक शान्ति का सृजन करती है
जैसे वो गुरु जो ईश्वर से भी बड़ा है
जो इन्सान को कुछ सृजन करने योग्य बनाता है

सिर्फ़ ज़ुबान वाले ही सृजन कर्ता नहीं होते
बेबस बेज़ुबान जीव भी सृजनशील होते हैं
शजर अपनी हरियाली शाखाओं की छाया से
मुसाफ़िर के लिये आराम का सृजन करता है
और फलों से भूख का तर्पण व रक्षण करता है
अपनी शुद्व वायु से प्राणों का संचार करता है

बिना पानी किसी जीव का जीवन साकार नहीं
बिना जीव के सृष्टि के निर्माण का आकार नहीं
इसलिये तो जल ही सब जीवों का जीवन है
बिना जीवन सृष्टि के निर्माण का आधार नहीं है
नींव के पत्थर भी परम-ब्रह्म हैं
जो भव्य इमारत का सृजन करते हैं
और नींव की मज़बूती के लिये दफ़्न हो जाते हैं

वो प्यार भी परम-ब्रह्म से कम नहीं है
जो नफ़रती दिलों में प्रेम का सृजन करता है
वो बच्चा भी परम-ब्रह्म से कम नहीं है
जो तलाक़शुदा पति-पत्नी में
आपसी विश्वास का सृजन करता है

वो कफ़न भी परम-ब्रह्म से कम नहीं है
जो लावारिस लाश के दाह संस्कार का सृजन करले

वो दुआ भी परम-ब्रह्म से कम नहीं है
जब जीवन रक्षक महंगी दवायें बेअसर होती हैं
और मृत्यु तुल्य जीवन का सृजन हो जाता है

प्रेमियों के लिये आँखें परम-ब्रह्म से कम नहीं है
जो सिर्फ़ इशारों में ही मुहब्बत का सृजन कर देती है
पति-पत्नी भी परम-ब्रह्म है
जो विपरीत परिस्थितियों में भी
गृहस्थी का सृजन करते हैं
भाई-बहिन भी परम-ब्रह्म से कम नहीं
जो सुख दुख के क्षणों में
आपसी विश्वास का सृजन करते हैं

जीजा-साली व देवर-भाभी भी
परम-ब्रह्म से कम नहीं है
जो रिश्तों की कशिश का सृजन करते हैं
सुहागन के लिये निशक्त पति का
सिन्दूर भी परम-ब्रह्म है

चिकित्सक भी परम-ब्रह्म से कम नहीं है
जो मृत प्राय रोगियों में
जीवन का संचार करते हैं
भूखें के लिये सूखी रोटी भी
परम-ब्रह्म से कम नहीं है

माता-पिता के लिये
होनहार और आज्ञाकारी सन्तान भी
किसी परम-ब्रह्म से कम नहीं है

नि:सन्तान दम्पती के लिये
अपाहिज बच्चा भी परम-ब्रह्म है
ममता से प्यासी माँ के लिये
आँचल से दूध पिलाते लम्हें
किसी परम-ब्रह्म से कम नहीं है

ज़बरदस्ती के वक़्त एक औरत के लिये
पाक़ दामन रह जाना
किसी परम-ब्रह्म से कम नहीं है
ग़रीब माँ-बाप के लिये
जवान लड़की के हाथ पीले हो जाना
किसी परम-ब्रह्म से कम नहीं है
नई नवेली दुल्हन के लिये
सुहागरात किसी परम-ब्रह्म से कम नहीं है।

आख़िरी ख़्वाहिश

नहीं चाहिये ऐसा ईलाज
जो आर्थिक रूप से बर्बाद कर
क़र्ज़ की दरिया में डुबो दे।

नहीं चाहिये ऐसी ख़िदमत
जिसमें दिली अक़ीदत न हो
जिसमें सिर्फ़ दौलत की फ़ितरत हो।

नहीं चाहिये वे परिजन
जो जीते जी नफ़रत से जियें
अब बदनामी की डर से रोयेंगे।

नहीं चाहिये ऐसे रिश्तेदार
जो सुख-दुख के भागीदार नहीं
अब सिर्फ़ रस्म निभाने आयेंगे।

नहीं चाहिये ऐसी औलाद
जिसने जीते जी यतीम कर दिया
अब शर्म के मारे फ़र्ज़ निभाने आयेंगे।

हालाते-हाज़रा पर गौर करता हूँ
और इच्छा मृत्यु का वरण करता हूँ

और अपनी देह का दान करता हूँ
ताकि मर कर कुछ ऐसा कर जाऊँ

जो जीते जी न कर सका
किसी की आँखों का नूर बन कर
उसके जीवन में उजाला कर जाऊँ।

मुझे उम्मीद है कि
मेरी आख़री ख़्वाहिश पूरी नहीं होगी
तब सिर्फ़ इतना सा करना
नहीं चाहिये वो कफ़न
जो किसी की आबरू न बचा सका
जो ग़रीब का बदन न ढक सका।

नहीं चाहिये ऐसे इन्सान
जनाज़े को कन्धा देने के लिये
जो मेरे इरादों को समझ न सके।

नहीं चाहिये ऐसा हुजूम
जो देखते रहे गुनाह होते हुये
और जिये ज़िन्दा मुर्दों की तरह।

नहीं चाहिये ऐसे फूल
जो शहीदों की बजाय
मुझ पर चढ़ाये जायें।
नहीं चाहिये ऐसे शजर
ख़ाक़ में मिलने के लिये
जो हरे-भरे कट गये।

नहीं चाहिये ऐसी बैठक
जिसमें सिर्फ़ आदमी आते हैं
खाना पूर्ति की श्रद्धांजली के लिये।
नहीं चाहिये ऐसा समाज
जो सिर्फ़ इकट्ठा होता है
पुण्य स्मृति में दान के लिये
सिर्फ़ राम का नाम ही सत्य है।

हम ऐसे क्यों हैं

पढ़ने लिखने की उम्र में
एक मासूम बच्चा जूठन धो रहा है
और हम उस नालायक बेटे का
जन्म दिन मना रहे हैं
जिसे बेटा कहते हुये भी शर्म आती है
आख़िर हम ऐसे क्यों हैं।

बन्द कमरे में गर्म कपड़े पहनकर
और रजाई ओढ़कर बैठे हैं
और फुटपाथ पर सर्द रातों में
ठण्ड से भिखारी मर जाते हैं
आख़िर हम ऐसे क्यों हैं।

आलीशान बंगले बनाने वाले
मेहनतक़श दिहाड़ी मज़दूर
कच्ची बस्तियों में रहते हैं ताउम्र
और वक़्त से पहले बूढ़े हो कर
मर जाते हैं अपने घर का ख़्वाब लिये
आख़िर हम ऐसे क्यों हैं।

हवा और पानी अपना है
चाँद और सूरज अपना है

दरिया और समन्दर अपना है
मगर बेहद अफ़सोस है कि
इन्सान के लिये सबसे ज़रूरी
इन्सान ही अपना नहीं है
आख़िर हम ऐसे क्यों हैं।

क्या मेरी बहिन बेटियाँ ही
मेरी बहिन बेटियाँ हैं
बाक़ी से मेरा कोई वास्ता नहीं
उनकी हिफ़ाजत का कोई ज़िम्मा नहीं
उनकी इज़्ज़त आबरू से
मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता
आख़िर हम ऐसे क्यों हैं।

इलाज़ के बिना मरीज़ मर जाते हैं
ग़रीब भूख से मर जाते हैं
होनहार बच्चे पढ़ नहीं पाते
कुछ के हाथ पीले नहीं हो पाते
कुछ दहेज की आग में जल जाती हैं
और हम करोड़ों रुपये
तिजोरियों में छोड़ कर मर जाते हैं
आख़िर हम ऐसे क्यों हैं।

तन को धोते हैं मन को धोते नहीं
सिर्फ़ उपदेश देते हैं कर्म करते नहीं
चन्द रुपयो के ख़ातिर
अपना ईमान बदल लेते हैं
आख़िर हम ऐसे क्यों हैं।

अपने को बुद्विमान और
दूसरों को मूर्ख समझते हैं
अपनी सुविधा के लिये
दूसरों को परेशान करते हैं
ख़ुद तो अमल में लाते नहीं
दूसरों को नसीहत देते हैं
आख़िर हम ऐसे क्यों हैं।

सिर्फ़ चाहते हैं कि
वतन महफ़ूज़ रहे
शहीद अपने घर नहीं
पड़ोसी के घर में पैदा हो
आख़िर हम ऐसे क्यों हैं।

अपनी ग़लती दूसरों के सर मड़ते हैं
काम न करने का
क्या ख़ूब बहाना करते हैं
फेसबुक और वाट्सअप्प पर
दिन रात व्यस्त रहते हैं
और पड़ौसी से अनजान रहते हैं
एक झूठ को छिपाने के लिये
झूठ पर झूठ बोलते रहते हैं
आख़िर हम ऐसे क्यों हैं।

चीर हरण पर ख़ामोश रहते हैं
सीता हरण की साज़िश रचते हैं
तीरन्दाज का अंगूठा
गुरु दक्षिणा में मांगते हैं

जिसको हम जगत जननी मानते हैं
जन्म से पहले ही गर्भ में
उसकी हत्या कर देते हैं
बेबस और लाचार को डायन मानते हैं
झांसी के जोश और जुनून को
बेरहमी से कुचल देते हैं
आख़िर हम ऐसे क्यों हैं।

माँ-बाप तो भगवान समान
मन्दिरों में किसे पूजते हो
वरिष्ठ को अनिष्ट मानते हो
सिर्फअपने बीवी बच्चों को
घनिष्ठ मानते हो
आख़िर हम ऐसे क्यों हैं।

ज़िन्दगी पानी का एक बुलबुला
साजो-सामान सदियों का बांधते हो
रिश्तों के बंधन में बन्ध कर
मोह माया का क्रन्धन मांगते हो
होनी को अनहोनी मानते हो
भाग्य से कर्म को कम मानते हो
लावारिस घायल को
सड़क पर पड़ा देख कर
अपने मतलब से आगे बढ़ जाते हो
आख़िर हम ऐसे क्यों हैं।

अपने ना कुछ लाभ के लिये
देश का लाखों का नुकसान कर देते हैं

प्रश्न पत्र को बेचते हैं
दुश्मन के लिये जासूसी करते हैं
भाई-भतीजावाद को बढ़ावा देते हैं
जायज़ काम भी रिश्वत से करते हैं
आख़िर हम ऐसे क्यों हैं।

मज़हब के नाम पर दंगा कराते हैं
मन्दिर और मस्ज़िदों को
आंतकियों का अड्डा बनाते हैं
मज़हब को सियासत से चलाते हैं
आख़िर हम ऐसे क्यों हैं।

हम तो कुछ करते नहीं
दूसरों को कुछ करने देते नहीं
बल्कि करने वाले को परेशान कर
करे कराये पर पानी फेर देते हैं
आख़िर हम ऐसे क्यों हैं
आख़िर हम ऐसे क्यों नहीं हैं।

इतना कुछ है तो

तुम्हारे पास इतनी वीरता है तो
थोड़ी सी उस योद्धा को दे दो
जो वीरगति को प्राप्त हुआ।

तुम्हारे पास इतनी दौलत है तो
किसी भिखारी को खाना खिला दो
किसी ग़रीब बच्चे को पढ़ा दो
या फिर किसी ग़रीब की बेटी के
जवान सूने हाथ पीले करवा दो।

तुम्हारे पास इतनी करुणा है तो
क़त्लख़ाने की असहनीय पीड़ा से
उस जीव को मृत्यु दान दे दो।

तुम्हारे पास इतना अनुभव है तो
थोड़ी सी सीख उस हताश को दे दो
जो निराशा के आगोश में जकड़ा है।

तुम्हारे पास इतना ज्ञान है तो
थोड़ा सा प्रकाश उस अज्ञानी को दे दो
जो अन्धकार में डूबा हुआ है।

तुम्हारे पास इतनी चालाकी है तो
थोड़ी बहुत उस मासूम को दे दो
जो दुनियादारी को थोड़ा बहुत जान सके।

तुम्हारे पास इतनी ममता है तो
थोड़ी बहुत उस बदनसीब माँ को दे दो
जिसने अपने कलेजे के टुकड़े को
सुनसान जगह पर मरने के लिये छोड़ दिया।

तुम्हारे पास इतना सुख है तो
थोड़ा बहुत उस ग़रीब विधवा को दे दो
जो बिना सन्तान के जवान विधवा हो गई।

तुम्हारे पास इतनी क्षमा है तो
उन ग़लतियों को माफ कर दो
जो जान बूझ कर नहीं की गई
भले ही उनसे तुम्हारा
तन-मन ही आहत क्यों न हुआ हो।

तुम्हारे अन्दर इतना प्रतिशोध है तो
वीर अभिमन्यु की हत्या का लेना
या फिर द्रोपदी की अस्मत का लेना
भले ही तुम्हारे सामने
भीष्म, द्रोण और कर्ण ही क्यों न हो।

तुम्हारा ख़ून इतना खोलता है तो
सरहद पर अपना जौहर दिखाना
ख़ून की वज़ह से मरते हुये को बचाना
जुल्म और सितम के खिलाफ लड़ना।

तुम्हारे पास वरदान देने की शक्ति है तो
इन सबको ऐसा अभिशाप देना
बुरी नज़र वाला आँखों से अन्धा हो जाये
बदज़ुबान बोलने वाला गूँगा हो जाये
दोगला इन्सान बहरा हो जाये
हत्यारे हाथों को लकवा मार जाये
ख़ुराफाती दिमाग़ को 'ब्रेन हेमरेज' हो जाये
मासूम का बलात्कारी नपुंसक हो जाये
नफ़रती दिल को अटैक आ जाये
रिश्वतखोर को बी.पी. और शुगर हो जाये
भ्रष्टाचारी हमेशा के लिये कोमा में चला जाये।

बहू के सपने

अब मेरे ख़्वाबों और ख़यालों पर
अब किसी और के सपने हावी हैं
क्योंकि अब मेरी शादी हो चुकी है
मुझे पति के सपनों को आकार देना है
देवर-ननद के सपनों को साकार करना है
सास-ससुर की उम्मीदों पर खरा उतरना है
बच्चों के भविष्य के सपनों का निर्माण करना है
इन सबके सपनों का बोझ कैसे उठा पाती
मैं भी तो एक इन्सानी जीव हूँ
मेरे तन-मन ने जवाब दे दिया
जिसका परिचायक है मेरा बेडौल शरीर

मेरे भी बहुत सारे सपने थे
सोचा था कि सपनों के राजकुमार के साथ
सफेद घोड़े पर सवार होकर पूरा करूँगी
अब ऐसा लगता है कि
अपने ख़्वाबों से समझौता गुनाह है
और बिना सपनों के जीना मरने के समान है
वैसे भी अब मैं एक बहू हूँ।

कविता का जन्म

कलमकारों को अक़्सर
यह कहते सुना है कि
देखिये कविता का जन्म
किस तरह से होता है
यह उन्हें क्या पता
यह तो कविता की माँ को पता है।

क्योंकि एक माँ ही बता सकती है कि
रचनात्मक जीव का सृजन
करना कितना कठिन है
नौ महिने गर्भ धारण करना पड़ता है
अपने रक्त से सींचना पड़ता है
अपने स्वयं के भोजन से
पालन-पोषण करना पड़ता है
तमाम तरह के दुख-दर्द
असुविधायें व परेशानियाँ
हँसकर सहन करती है।

अपना सौभाग्य समझकर
असहनीय प्रसव की पीड़ा
सहन करती है अपना फ़र्ज़ समझकर।

क्योंकि उसको मालूम है कि
प्रकृति ने यह वरदान उसे ही दिया है
अच्छी तरह वो अपना फ़र्ज़ निभाती है
माँ की ममता का क़र्ज़ चुकाती है
तब जाकर बड़ी मुश्किल से
एक जीव का सृजन हो पाता है।

तमाम कष्ट सहन करती है
पाल-पोषकर बड़ा करती है
पढ़ा-लिखा कर संस्कारित करती है
तब जाकर उसका नाम रोशन होता है
और बुढ़ापे का सहारा बनता है।

क्या एक कलमकार भी
प्रकृति प्रदत माँ बनकर
रचना का सृजन कर सकता है
कर सकता है, मगर शर्त हैं कि
कविता को धारण करे
अपने दिल व दिमाग़ में
सृजन की पीड़ा को महसूस करे

अपने मन और मस्तिष्क में
पालन पोषण करे अपने ज्ञान से
तन्हाईयों में अपने विचारों से
कविता के आकार को साकार करे
अपने चिन्तन व मनन से सिंचित करे
प्रस्तुतिकरण से प्रभावशीलता प्रदान करे

अपने संवेदनशील विचारों की
सृजनशील सुन्दर कल्पना को
शब्दों की माला बनाकर
तन और मन से वरण कर
परम आनन्द का अनुभव करे।

तब जाकर कविता के व्यक्तित्व में
असरदार निखार आता है
तब जाकर एक कलमकार
दमदार रचनाकार बनता है
और इतिहास के सुनहरे पन्नों में
हमेशा के लिए अमर होता है।

ज़िन्दगी का फलसफ़ा

मिठाई का मतलब
एक चम्मच शक्कर है
जो प्रतीक है छोटी-छोटी
ख़ुशियों से सन्तुष्ट होने का
जो परिचायक है
अपने साधनों से जीवन यापन का
वर्ना तो इच्छायें अनन्त और अतृप्त है
जिनको पूरा करने के लिये मौजूद है
तमाम तरह के ग़ैर क़ानूनी साधन
जिनका आख़िरी नतीजा भी
आपको मालूम होना चाहिये
हर इन्सान को ज़रूर भुगतनी है
अपने-अपने कर्मों की सजा।

वस्त्र तो लज्जा निवारण का
एक मात्र साधन है
क्या शरीर के किसी भी अंग की
कल्पना नहीं की जा सकती
क्या हम सब हमाम में नंगे नहीं हैं
फिर इतने महंगें वस्त्र क्यों
कोई फटेहाल कपड़ों में
शर्मसार और बेआबरू क्यों।

परिस्थितियाँ ऐसी हो तो
चिता पर भी तो
रोटियाँ सेकी जा सकती हैं
यह इस बात का प्रतीक है कि
हम कितने व्यावहारिक है
आटे से रोटी बनाने के लिये
आग की ज़रूरत होती है
आग चूल्हे की हो या फिर
चिता की क्या फ़र्क़ पड़ता है
वक़्त पर काम होना ज़्यादा मायने रखता है
क्योंकि समय बलवान है
और वक़्त ही मूल्यवान है।

लॉकर में बन्द रुपये
काग़ज़ के बराबर मात्र है
क्योंकि रुपये की क्रय शक्ति को
क़ैद कर निरर्थक कर दिया है
रुपये की आत्मा का गला घोंट कर
उसे दफ़्न कर दिया है

रूह के बिना शरीर
बेजान कन्धों पर लाश की तरह है
भले ही ग़ैर क़ानूनी तरह से
कमाई के साधन हों
कमाई का बाज़ार में चलन तो हो।

भगवान के अभिषेक के लिये
रोजाना लाखों लीटर दूध

गन्दी नालियों में बहाकर
बेकार कर दिया जाता है
जबकि देश में करोड़ों बच्चे
कुपोषण की गम्भीर बीमारी से पीड़ित है
और समय से पूर्व
मौत के आगोश में समा जाते हैं
कितना अच्छा हो कि ये दूध
इन मासूम बच्चों को पिलाया जाये
जो दुआ ये जर्ज़र बच्चे
इनके लाचार और बेबस
माता-पिता दिल से दुआ करेंगे
उसकी कल्पना भी आसान नहीं है।

मज़ारों पर रेशमी व महंगी चादरें
अपनी मन्नतें पूरी होने के लिये चढ़ाते हैं
और फुटपाथ पर ग़रीब व भिखारी
सर्द रातों में मर जाते हैं
यतीम और ग़रीब फटेहाल कपड़ों में
अपनी आबरू बचाने की कोशिश करते हैं

क्या ऐसे इन्सानों की
मन्नतें पूरी हो पायेंगी
हज़ारों में से कुछ की मन्नतें
वैसे ही पूरी हो जाती है
क्योंकि वे इन्सान उस दिशा में
सार्थक प्रयास करते हैं
और कोशिशें हमेशा कामयाब होती है।

मन्दिरों के तहख़ानों में
घर की तिजोरियों में
बैंकों के लॉकर्स में
अरबों रुपये का कीमती सोना
दफ़्न होकर बेकार पड़ा है
जिसका कोई भी सार्थक उपयोग नहीं
देश, विदेशी ऋण के बोझ से दबा है
स्वीकार करनी पड़ती हैं
ऋण देने वाले की नाजायज़ शर्तें
देश की इज़्जत को
गिरवी रखना पड़ता है

आम इन्सान महरूम है
बिजली-पानी, यातायात
स्वास्थ्य, शिक्षा और मकान
जैसी आवश्यक सुविधाओं से
सुविधाओं के लिये धन आवश्यक है
और धन बेकार पड़ा हुआ है
कितना अच्छा हो ये बेकार धन
देश के आर्थिक विकास में काम आये
और देश समृद्ध और ख़ुशहाल हो।

ईश्वर का अवतार

क्या इन्सान मौत से
इतना ख़ौफ़ज़दा हो जाता है
जो अपनी बहन के बच्चों की
बेरहमी से निर्मम हत्या कर देता है।

उन माँ-बाप पर क्या गुज़रती होगी
जो अपने नवजात कलेजे के टुकड़े को
इस तरह मरते हुये देखते होंगे
मासूम बच्चों की चीखों से
उनका कलेज़ा फट जाता होगा।

सख़्त जंजीरों में जकड़े
जेल की मजबूत सलाखों में क़ैद
बेबस और लाचार माँ-बाप
सिर्फ़ अनुरोध ही कर सकते हैं
मासूम की जान बचाने के लिये।

मन्ज़र कितना ख़ौफ़ज़दा हो जाता होगा
इस दिल दहलाने वाले हालात से
क्या इतने ख़तरनाक व दर्दनाक
जुल्म और सितम के बाद ही
तब ही ईश्वर अवतार लेता है।

अभी भी तो हालात इतने ख़राब हैं कि
भाई ही भाई के ख़ून का प्यासा है
रखवाला ही अस्मत का लुटेरा है
कोई जयचन्द जैसा देशद्रोही है

तो कोई दुर्योधन जैसा दुराचारी है
कोई भ्रष्टाचारी है तो कोई रिश्वतखोर है
कोई शातिर दिमाग़ शकुनी है
तो कोई अहंकारी रावण है

कोई नरबख्शी अत्याचारी है
कोई मज़हबी जेहाद में औरगंजेब है
तो कोई जलियाँवाले बाग में
निहत्थों का हत्यारा जनरल डायर है

कोई कंस से भी बढ़कर भ्रूण हत्यारा है
कोई झूठा और मक़्कार नेता है
कोई माँ-बाप को यतीम करने वाला बेटा है
कोई इन्सानियत का ख़ूनी हैवान है

कोई मजदूर का हक़ मारने वाला
जालिम और शैतान ज़मींदार है
कोई दहेज लोभी लालची भेड़िया है।

कोई ढोंगी साधू संत व्यापारी है
कोई अत्याचारी सास व जेठानी है
क्या यह जुल्म और सितम काफी नहीं
ईश्वर का अवतार होने के लिये।

क़रिश्मा रिश्वत का

जाल में तो बेचारी
छोटी मछलियाँ फंसती है
मगरमच्छ तो दरिया में
बेख़ौफ़ विचरण करते हैं।

कुछ शातिर मगरमच्छ तो
एक हज़ार करोड़ के अफ़सर हैं
कुछ बेकाबू मगरमच्छ
पाँच सौ करोड़ के बाबू हैं
और कुछ शैतान मगरमच्छ
एक सौ करोड़ के चपरासी हैं।

इन मगरमच्छों को पालने वाले
और दाना-पानी देने वाले
कितने दमदार व ताक़तवर होगें
इनके रसूख़ात से दरिया भी
अपना रुख़ बदल लेती है।

और इनके मन मुआफ़िक तरीके से
इनके मुताबिक बहने लग जाती है।
दरिया में इनकी मौजूदगी से
जाल कमज़ोर और मज़बूर हो जाती है

इनके दौलत व गुनाहों की क़श्तियाँ
रिश्वत की पतवार से
ख़तरनाक़ तूफान में भी
साहिल पे आ जाती है

दरिया इनकी मक़्कारी ख़ुदग़र्ज़ी
और मनमर्जी से न बहे तो
उसका वजूद ख़त्म हो जाता है।

लोकतन्त्र की सियासत

वादों का आटा
सेवा के इरादों का मेवा
दिखावटी ईमानदारी का
नकली मगर सुगन्धित घी
सपनों के शक्कर की चासनी
राहत की उम्मीद का पानी
मज़हब और जाति की कढ़ाई
चापलूसी की चम्मच
साज़िश और आरक्षण की आँच
भाई-भतीजावाद की लकड़ियाँ
रंज़िश व नौकरशाही की इलायची
लाल फीताशाही की भट्टी
दंगे-फसाद की हवा से
बना हुआ सियायत का नापाक़ हलवा
नासमझ और भोली-भाली
बेचारी असहाय जनता को
लोकतन्त्र की दुकान में
चुनावों की शतरंजी बिसात पर
साज़िशों की मनुहार से
ख़ुदग़र्ज़ी के ख़्यालातों से
नफ़रतों की थाली में
ज़हरीले मीठे हाथों से

रोजाना परोसते रहिये
ताकि सत्ता की सेहत
ख़ुशहाल और निरोगी रहे
इस तरह कुर्सी उम्रदराज़
हसीन और जवान बनी रहे
ताकि आप मदमस्त सत्ता के दामन में
दौलत के गजरे-मुज़रे के साथ
शानो-शौक़त की महफ़िल में
शराफ़त की दाग़दार कोठी में
बेवफ़ाई के संगीत से
नाजायज़ अरमानों की ख़्वाहिश को
बेहिसाब तरक़्क़ी के ख़्वाबों को
रंगीन और नशीले बिस्तर पर
लालच की मदहोशी में
गैर क़ानूनी जायदाद में
बंजर ज़मीन की हरियाली में
बेशक़ीमती खलिहानों में
ख़ुशहाल जीवन का सफ़र
सत्ता के सुरूर में कटता रहे।

अपाहिज कौन है

अन्धे इन्सान को
ऐसा एहसास होता है कि
इस कायनात में
हर चीज काली होती है
और इस जहान में
अंधेरे के सिवा
कुछ भी नहीं है।

अपंग इन्सान की रगों में
ख़ून इस लिए ख़ौलता है कि
यह इन्सान चलते कैसे है।

एक गूंगा इन्सान
सिर्फ़ इतना सोचता है कि
कुछ समझने के लिए
जुबान की क्या ज़रूरत है
लफ़्ज और अल्फ़ाज़ तो बेमानी है।

बहरे इन्सान के लिए
इशारे ही इबादत के समान है
जिसे पढ़कर उसको आवाज़
और जुबान का एहसास होता है।

मन्दबुद्धि इन्सान को तो
सारी दुनिया बेवकूफ लगती है
सिर्फ़ एक वो ही अक़्लमन्द है।

जो इन्सान हर तरह से ठीक है
उसके मुताबिक़ इंसान को
वैसा सोचना चाहिये
जैसा वो सोचता है
इन्सान को वैसा बोलना चाहिये
जैसा उसे सुनना पसन्द है
इन्सान को वैसा चलना चाहिये
जैसे वो चलना चाहता है

हकीक़त में अपाहिज़ कौन है
यक़ीनन वो इन्सान
जो दिमाग़ी तौर पर परेशान है
और इन्सानों को
अपने मुताबिक़ चलाना चाहता है।

तरक़्क़ी-ए-ज़िन्दगी

मेरे दिलो दिमाग़ में
उनके लिए बेपनाह मुहब्बत है
इसलिए मैं चाहता हूँ कि
उनकी तत्काल मौत हो जाये
ताकि वो और अधिक
पाप व अत्याचार करने से
अपने आपको महफूज़ कर सके।

क्योंकि बद्दुआओं की तासीर
इतनी ख़तरनाक़ होती है कि
हँसता-खेलता और मुस्कुराता
दौलत मन्द इन्सान भी
नर्क से बदतर ज़िन्दगी जीता है।
और दुआओं में इतनी ताक़त होती है कि
हर तरह से बदहाल इन्सान भी
ख़ुशहाल ज़िन्दगी जीने लगता है।

कायनात में इन्सान की ज़िन्दगी
बड़ी मुश्क़िल से मिलती है
इसलिए अच्छे काम करते रहें
ताकि ज़िन्दगी को बेहतर किया जा सके
जिससे चैनो-सुक़ून मिल सके
और जन्नत में मुक़ाम हासिल किया जा सके।

यह भी कोई जीना है

ऐतबार के ख़न्ज़र से
जो घायल हुआ है
बेपनाह मुहब्बत में
जिसका दिल टूटा है।
जवान बेटे की मौत को
जिस माँ-बाप ने देखा है।

सामूहिक बलात्कार की पीड़ा को
जिस लड़की ने भुगता है।
पति हाने के बावजूद भी
माँग से सिन्दूर पोंछा है।
जिसकी सूनी कलाई में
नहीं एक भी धागा है।

जो बेहिसाब चाहतों में
दिन में बेचैन
और रातों में जागा है।
दहेज के जान लेवा तानों में
जिसका तन-मन जला है।
लायक बेटों के बावजूद भी
यतीमों की तरह जिया है।

नापाक साज़िशों के चक्रव्यूह में
जो बेगुनाह सज़ा पाता है।
बेबुनियाद गवाहों और सुबूतों से
जो अपराधी साबित होता है।

दादा के लिए लिये गये क़र्ज़ में
जो पोता गुलाम रहता है।
रक्षा बन्धन का त्यौहार
जिस बहन का सूना-सूना है।
जो बिना साली और भाभी के
रिश्तों की क़शिश से अभागा है।

बिना माँ और पिता के
जो एक अनाथ बच्चा है
जिस पति-पत्नियों में
एक दूसरे का नहीं भरोसा है।
जिस औरत ने बदन बेचकर
अपने बच्चों को पाला है।

बी.पी. और शुगर की लाचारी से
जो दौलतमन्द स्वाद का प्यासा है।
यक़ीनन यह सब ज़िन्दा है
मगर ज़ख़्मी रूह से ज़िन्दा मुर्दे हैं
और मरने के लिए ज़रूरी नहीं
रूह का बदन से जुदा होना।

किसान की ज़ुबानी

हरी-भरी फ़सलों से
तन-मन में ख़ुशी का रंग है
सारे गाँव में बजता
ख़ुशहाली का चंग है
बेमौसम की इस बारिश ने
कर दिया रंग में भंग है।

फ़सलों के वक़्त जब-जब भी
आसमान में बिजली चमकती है
भाग्य विधाता की शमशीर
किसानों के सीने में उतरती है।

क़ुदरत तुझे और कितना बेरहम होना है
खेतों में खड़ी फ़सलें
लाशों की तरह पड़ी है
जिनके उपर ओलों की बर्फ़
कफ़न की तरह पड़ी है।

बदहाल खेतों-खलिहानों में
शमशान सा सन्नाटा है
ख़स्ता हाल जर्ज़र मकानों में
जवान मौतों का मातम है

गाँव की गलियाँ और चौपाल
सुनसान और वीरान है
क़ुदरत तुझे और कितना जालिम होना है
अन्नदाता के घर में
खाने को दाना नहीं है
जवान बेटी की माँग में
सुहाग का सिन्दूर नहीं है।

कोई पत्थर की मूरत बनकर बैठा है
कोई खोया-खोया सा उदास बैठा है
कोई दिन में परेशान व हैरान बैठा है
कोई पूनम को अमावस की रात कर बैठा है
कोई हताश आँखों से ख़ौफ़ज़दा बैठा है।

क़ुदरत तुझे और कितना सितमगर होना है
बहा कर अश्क़ों की दरिया
ग़मों के उफनते समन्दर में
ज़िन्दगी की क़श्ती को
अभावों के मझधार में
बिना पतवार क़ुदरत के सहारे बैठा है

सूदखोरों और ज़मीदारों का
बन्धुआ मजदूर बनकर बैठा है
गहरी हताशा और निराशा में
मजबूरन आत्महत्या कर बैठा है।

क़ुदरत तुझे और कितना हत्यारा होना है
सियासत ने जख़्मीं किसानों का

बेरहमी से सीना चीरा है
सरकारी मदद के नाम पर
ऊँट के मुँह में जीरा है।

जवान हाथ बेरोजगार है
पापी पेट के लिये क़र्ज़दार है
हर तरफ मचा हुआ
भुखमरी का हा हा कार है
दीन-हीन किसान का
अब कौन पालनहार है

क़ुदरत तुझे और कितना शैतान होना है
किसान ही क़ुदरत का
सबसे बड़ा हितैषी है
किसान ही क़ुदरत के
सबसे ज़्यादा नज़दीक रहता है
और सबसे अधिक ज़ुल्मो-सितम
अपना भाग्य समझ कर सहता है

धरती को अपनी माता मानता है
धरती की हिफ़ाज़त के लिये
अपनी जान पर खेलता है
धरती के मान-सम्मान के लिए
अपनी इज़्जत गिरवी रखता है
और क़ुदरत के जलजले से
एक दिन बेमौत मर जाता है
क़ुदरत तुझे और कितना हैवान होना है।

हे! ईश्वर ऐसा कर दो

हे! परमपिता परमेश्वर
तुम मुझे मन्द बुद्धि कर दो
ताकि मैं समझ न सकूँ
ख़ुदग़र्ज़ और मतलबी दुनिया की
नापाक़ शतरंजी चालों को
ख़तरनाक़ और मक़्कार इरादों को
ज़हरीले और दूषित ख़यालातों को
ख़ुराफाती दिमाग़ में रक्त रंजित सोच को
रिश्वत और भ्रष्टाचार के घपलों को
ख़ास अपनों में बनावटी रिश्तों को
ताकि मैं मानसिक तनाव से बच सकूँ

हे! परमपिता परमेश्वर
तुम मुझे अन्धा कर दो
ताकि मैं देख न सकूँ
उन नामर्द ज़िन्दा मुर्दो को
जो गुनाहों को होते देखते रहें
और गुनाहगारों को पनाह देते रहें
और बुज़दिल बनकर देखते रहें
असहाय पर होते अत्याचार को
लाचार के साथ होते बलात्कार को
रंज़िश में होती चीख़ पुकार को
दहेज में जलती मासूम को

नफ़रत की आग में जलते इन्सान को
दौलत के नशे में ज़िन्दा शैतान को
सत्ता के अभिमान में वहशी हैवान को
ताकि मैं उन गुनाहों से बच सकूँ
क्योंकि गुनाहों को होते हुये देखना
करने से भी बड़ा गुनाह है।

हे! परमपिता परमेश्वर
तुम मुझे बहरा कर दो
ताकि मैं सुन न सकूँ
साज़िश रचती मुलाक़ातों को
ज़हर उगलती मज़हबी हिदायतों को
भाई-चारे में विष मिलाती बातों को
ताकि मैं चैन और सुक़ून से रह सकूँ
तन्हा और वीरान आशियाने में

हे! परमपिता परमेश्वर
तुम मुझे गूँगा कर दो
ताकि मैं बदज़ुबानी कर न सकूँ
मेरी वाणी किसी को घायल न कर दे
मेरे लफ़्ज ख़न्ज़र की तरह न चुभें
मैं पीठ पीछे किसी की बुराई न कर सकूँ
ताकि मैं किसी का भी बुरा बनने से बच सकूँ

हे! परमपिता परमेश्वर
तुम मुझे पत्थर दिल इन्सान कर दो
ताकि मैं ख़ून के आँसू न बहा सकूँ
किसी असहाय भिखारी को
भीख माँगते हुये देख कर
किसी मज़बूर को बदन बेचता देखकर

किसी मासूम और अनाथ को
झुठन को धोता हुआ देखकर
जवान बेटे की मौत पर
माँ बाप को रोता हुआ देखकर
ग़रीब और जवान विधवा को
बच्चों के साथ बिलखता हुआ देख कर
दो लाचार दिलों को मुहब्बत से
तन्हाई में तड़पता हुआ देख कर
किसी यतीम को बिना इलाज
बेवक़्त मरता हुआ देख कर
उम्र-दराज़ ग़रीब लड़की को
दहेज के लालच में कुवाँरी देखकर
इन सब वज़ह से कहीं मैं
ग़मगीन और संवेदनशील हो जाऊँ
इसलिये मुझे हैवान-शैतान कर दो
ताकि मैं ख़ुशहाल ज़िन्दगी गुज़ार सकूँ

हे! परमपिता परमेश्वर
तुम मुझे अब मौत दे दो
ताकि उस ज़लालत से बच सकूँ
जो शराफ़त की ज़िन्दगी में मिलती है
जो ईमानदारी की नौकरी में मिलती है
जहाँ वफ़ा के बदले ज़फ़ाये मिलती है
जहाँ बेगुनाह को सज़ायें मिलती है
और भी ऐसा बहुत कुछ है
जो देखा ना जा सके, जो सुना ना जा सके
जो किसी के द्वारा सहा ना जा सके
जो किसी भी इन्सान के द्वारा करा ना जा सके
ताकि मैं चैन से चिर निन्द्रा में सो सकूँ।

धरती माँ की पुकार

क़ुदरत ने इन्सानों को माँ की तरह
पाल-पोष कर अपने पैरों पर खड़ा किया
भूख मिटाने के लिये अन्न और फल दिये
बदन को महफूज़ रखने के लिये कपड़े दिये
प्यास बुझाने के लिये अमृत सा पानी दिया
थकान मिटाने के लिये सुहावनी छाया दी
ऊर्जा और उष्मा के लिये लकड़ियाँ दी
ज़िन्दा रहने के लिये ताज़ा हवा दी
सुन्दर होने के लिये सौन्दर्य प्रसाधन दिये
निरोगी रहने के लिये औषधियाँ दी
मकानों की मज़बूती के लिये रेत-पत्थर दिये
मकानों की सुन्दरता के लिये इमारती लकड़ी दी
बहुमूल्य धातु सोना और चाँदी दी
बेशक़ीमती हीरे और जवाहरात दिये
आर्थिक विकास के लिये लोहा दिया
दैनिक जीवन में उपयोगी खनिज दिये
यानि सुख सुविधा के समस्त संसाधन दिये
और इन्सान ने अपने लोभ लालच के लिये
मेरे संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया
प्रदूषण और गन्दगी से मुझे बदसूरत किया
मैं और कितने ज़ुल्म बर्दाश्त करती
मेरी सहन शक्ति ने जवाब दे दिया

आख़िर एक माँ और क्या कर सकती थी
अपनी मतलबी और नालायक सन्तानों की
नाजायज़ और ख़ुदग़र्ज़ ख़्वाहिशों के लिये
मज़बूरन मेरा बदन फूट पड़ा
ज्वालामुखी का लावा बनकर
मेरा जीवनदायी लहू बह गया

बेमौसम की बारिश बनकर
मेरी प्राणदायनी साँसे ख़त्म हो गई
आँधी-तूफ़ान के जानलेवा जलजले से
मेरी सन्तानें ही अत्याचारी हो गयी
ममतामयी मासूम माँ का
कोमल कलेजा ही फट गया
मेरे क़हर का विस्फोट हो गया
और ख़ुशहाल संसार का सर्वनाश हो गया
हर तरफ दर्दनाक और ख़तरनाक़
चीख पुकार के आंतक से मातम हो गया
लालची और भूखे भेड़ियों को
शायद अब कुछ समझ में यह आ जाये
और मेरे दिली जज़्बातों की
दिल और दिमाग़ से क़द्र करने लग जायें।

उन्नति की तलाश में

कहीं पर घोड़े की जगह
ताँगें में जुता हुआ इन्सान है
कहीं पर बेल की बजाय
हल में जुता हुआ इन्सान है
जातिवाद और छुआछूत की परम्परा से
जूठन खाता और मेला ढोता इन्सान है
ज़मींदारी, सूदखोरी और लगान में
पीढ़ियों से बन्धुआ मज़दूर इन्सान है
क्या हम उन्नति की तलाश में
इन्सानियत से दूर हो गये हैं।

कई मासूम बच्चे ढाबों पर
देर रात तक जूठन धो रहे हैं
कई बेबस और लाचार औरतें
कोठे की चारदिवारी में बिलख रहीं हैं
कई मेहनतक़श दिहाड़ी मज़दूर
फुटपाथ पर आधे नंगे शरीर से
फटेहाल कपड़ों में बेसुध पड़े हैं
यतीम खाने में कई मज़बूर बुज़ुर्ग
मज़बूरी में ज़िन्दा रहने के लिये
ज़िन्दा लाशों की तरह पड़े है
क्या हम उन्नति की तलाश में
इन्सानियत से दूर हो गये हैं।

कई होनहार और हुनरमन्द बच्चे
अभावों में गुज़र बसर कर रहे हैं
कई सुशील और सुन्दर लड़कियाँ
दहेज की ज्वाला में जलाई जा रही हैं
आरक्षण की रस्साकशी से
बच्चे हताश और निराश होकर
फ़ाँसी के फ़न्दे पर झूल रहे है
भाई-भतीजावाद की साज़िश से
नाजायज़ सुबूत और गवाही से
बेगुनाह को दफ़्न कर रहे हैं
रिश्वत और भ्रष्टाचार के जलजले से
वतन और क़ानून के रखवाले
शासन और अनुशासन को ख़त्म कर रहे हैं
क्या हम उन्नति की तलाश में
इन्सानियत से दूर हो गये है।

कुछ पाने की आपाधापी में
घर-परिवार की ख़ुशियाँ छीन रहे हैं
झूठी शान और शौहरत के लिये
दिन का चैन और रातों की नींद
पागलपन में बर्बाद कर रहे हैं
ख़ुदग़र्ज़ और मतलबी रिश्तों के लिये
अपनेपन में ज़हर घोल रहे हैं
क्या हम उन्नति की तलाश में
इन्सानियत से दूर हो गये हैं।

कई जगह सोने की थाली में पकवान
तो कई जगह बड़ी मुश्क़िल से

दो वक़्त के सूखे निवाले हैं
मज़हबी सियासत और दहशतग़र्दी में
मरते रोज इन्सान भोले-भाले हैं
नफ़रत और रंज़िश की फ़िरक़ा परस्ती से
भाई-चारे की बस्ती में हर तरफ दंगे है
छेड़खानी, ज़बरदस्ती और बलात्कार से
औरत की नज़र में आबरू से नंगे है
क्या हम उन्नति की तलाश में
इन्सानियत से दूर हो गये हैं।

जानवरों में इन्सानियत

जानवर मुसीबत के वक़्त में
अपने साथी जानवरों की
अपनी समझ से हर सम्भव
मदद करने की पूरी क़ोशिश करता है
और संगठन में शक्ति का
परिचय देता है
जबकि उसका शरीफ दिमाग़
पूर्णरूप से अविकसित है
और उसके पास साधन भी सीमित है।

मगर वाह! रे बुद्धिमान इन्सान
तेरे पास विकसित दिमाग़ होते हुये
हर प्रकार की सुख-सुविधा
और साधन सम्पन्न होते हुये भी
तू अपने इन्सानी भाई-बन्दों के लिये
मुसीबत जानबूझकर पैदा करता है
मुँह में राम बगल में छुर्री रखता है
पीठ पिछे ख़न्ज़र से वार करता है
वतन व ज़माने से दगाबाज़ी करता है
ख़ास अपनों से बेवफ़ाई करता है
ख़ुदग़र्ज़ और मतलब की ज़िन्दगी गुज़ारता है
रंज़िश और नफ़रत की साज़िश रचता है

प्यार-मुहब्बत का क़त्ल करता है
अम्न और चैन की बस्ती जलाता है
भाईचारे के महकते हुये गुलशन को
बेरहमी से उज़ाड़ देता है
क़ुदरत से छेड़खानी करता है
अपने मुनाफ़े के लिये दोहन करता है
ख़ुदा के वज़ूद को नकारता है
ज़रूरत से ज़्यादा खाता और संग्रह करता है

इसलिये हे! ज्ञानी इन्सान
तुझसे तो जानवर भी ज़्यादा इन्सानियत रखता है
और अपने कर्तव्य का सत्यनिष्ठा से निर्वाह करता है
और अपने जानवर साथियों के प्रति
अपनी इन्सानियत का पालन करता है।

आम आदमी का महाभारत

मेरे अन्दर दुर्योधन जैसा अंहकार है
मेरे शकुनी जैसे धुर्त सलाहकार है
मेरे कर्ण जैसे मूर्ख शूरवीर मित्र है
मेरे दुशासन जैसे दुसाहसी भाई है
मेरे धृतराष्ट्र जैसे पुत्र मोह में जकड़े पिता है
फिर मेरे पारिवारिक जीवन में
सर्वविनाश का महाभारत क्यों न होता।

मेरे भीष्म जैसे लाचार महारथी पितामह है
मेरे द्रोण जैसे स्वार्थी गुरु है
मेरे अनेक अधर्मी राजा सहायक है
मेरे कृपाचार्य जैसे बेबस पुरोहित है
मेरे विदुर जैसे मज़बूर ज्ञानी सलाहकार है
फिर मेरी सामाजिक ज़िन्दगी में
अधर्म का महाभारत क्यों न होता।

मेरे अन्दर द्रोपदी जैसा प्रतिशोध है
मेरे अन्दर भीम जैसी बलशाली प्रतिज्ञा है
मेरे अन्दर अर्जुन जैसा बुद्धिमान शूरवीर है
मेरे अन्दर युधिष्ठिर जैसा निष्पक्ष धर्म है
मेरे अन्दर माता कुन्ती व गान्धारी की निष्ठा है
मेरे अन्दर कृष्ण जैसा न्याय प्रिय कर्मयोग है

मेरे अन्दर वीर अभिमन्यु जैसी नादानी है
मेरे अन्दर एकलव्य जैसी गुरु के प्रति श्रद्धा है
फिर मेरे तन और मन में
फिर मेरे अंग-अंग, रोम-रोम में
मेरे दिल और दिमाग़ में
धर्म के लिये महाभारत क्यों न होता
अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध
महाभारत क्यों न होता।

भारत में महाभारत

एक ज़िन्दा इन्सान को
ज़िन्दा साबित करने में
बीस वर्ष लग जाते है
यह मेरे महान भारत में
नौकरशाही का महाभारत है।

दादा मुक़दमा दर्ज करे
और पोता भी लड़ता रहे
यह मेरे महान भारत में
न्याय का महाभारत है।

आई.ए.एस. अफ़सर का बेटा भी
आरक्षण का लाभ लेता है
यह मेरे महान भारत में
समृद्ध जातिवाद का महाभारत है।

पुलिस को देखकर
असुरक्षा लगती है
जबकि पुलिस हमारी रक्षा के लिये है
यह मेरे महान भारत में
सुरक्षा का महाभारत है।

साहित्य संस्था में वे पदाधिकारी है
जिनका साहित्य से कोई वास्ता नहीं
यह मेरे महान भारत में
प्रबन्ध व्यवस्था का महाभारत है

आम आदमी के लिये दाल
एक सौ बीस रुपये किलो
आटा, नमक, मिर्च का खर्च अलग से
और संसद में भर पेट
स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन
मात्र बीस रुपये का
यह मेरे महान भारत में
समानता का महाभारत है।

बीच सड़क पर हत्या करने वाले
सरेआम बलात्कार करने वाले
रंगे हाथ रिश्वत लेते भ्रष्टाचारी
बिना सुबूत और गवाह के
बेख़ौफ़ शान से विचरण करते है
यह मेरे महान भारत में
अन्धे क़ानून का महाभारत है।

भूख और प्यास से मौत
सर्द रातों में भिखारियों की मौत
फुटपाथ पर सोते मज़दूर
बदहाल कच्ची बस्तियों में
जानवरों की तरह रहते इन्सान
जूठन धोता मासूम बचपन

भीख माँगते अपाहिज बुजुर्ग
ग़रीबी में बिकते कलेजे के टुकड़े
यह मेरे महान भारत में
अमीरी का महाभारत है

वर्षों से बन्धुआ मज़दूरी करते किसान
साहूकार के कर्ज़ में जकड़े इन्सान
और हम बात करते है
चाँद पर जाने की
यह मेरे महान भारत में
ख़ुशहाली का महाभारत है।

मण्डल आयोग की वज़ह से
छह प्रतिशत वाले का प्रवेश होता है
अस्सी प्रतिशत वाला कमण्ड़ल लेकर
मारा-मारा दर-दर भटकता है
यह मेरे महान भारत में
कुंठित प्रतिभा का महाभारत है।

दहेज की चिता पर जलती बहुएं
भ्रूण हत्या में मरती बेटियाँ
कोठों पर सिसकती माँ की ममता
ख़ुदकुशी करती हताश और निराश बहनें
यह मेरे महान भारत में
नारी के महत्त्व का महाभारत है।

सफेद हाथी, आस्तीन के सांप, बगुला भगत
जिस थाली में खाया उसी में छेद किया

घोड़ों को घास नहीं और
गधों को गुलाब जामुन
मुँह में राम और बगल में छुरी
जिसकी लाठी उसी की भैंस
अपना जोगी जोगणा और गाँव का सिद्ध
राम-राम जपना पराया माल अपना
नमक हराम, ढपोल शंख
अन्धेर नगरी चौपट राजा
मार के मारे भूत भागता है
भैंस के आगे बीन बजाना
अन्धों में काणा राजा
नाच ना जाने आंगन टेढा
बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद
चने के झाड़ पर चढ़ाना
चोर-चोर मौसेरे भाई
चोर की दाढ़ी में तिनका
बाप बड़ा न भैया सबसे बड़ा रुपया
अक़्ल बड़ी या भैंस
यह मेरे महान भारत में
सच होते मुहावरों का महाभारत है।

जननी सुरक्षा योजना के होते हुये
आये दिन सड़कों पर प्रसव
यह मेरे महान भारत में
कतर्व्य के प्रति उदासीनता का महाभारत है

इधर की मिट्टी उधर
और उधर की मिट्टी इधर

हो गई नरेगा की खानापूर्ति
यह मेरे महान भारत में
सरकारी योजनाओं का महाभारत है

संसद में अपने स्वार्थ की बहस
नफ़रत और रंज़िश की मज़हबी चालें
यह मेरे महान भारत में
नीति में राजनीति का महाभारत है।

ममता की महानता

जबरदस्ती के वक़्त गर्भवती हुई
तन-मन से बेहद आहत होती है
बेरहमी से बदन ज़ख्मी होता है
हैवानियत से ख़ौफ़ज़दा रहती है
शैतानियत से सहमी-सहमी रहती है
ज़माने की ज़लालत बर्दाश्त करती है
अपनों के आग उगलते ताने सहती है
तमाम परेशानी और कष्टों को सहती है
अपने घर से भी बेघर होती है
फिर भी उस संतान को जन्म देती है
पाल-पौष कर बढ़ा करती है
और उसे अपना नाम भी देती है
यह एक जननी की महानता है
और माँ की ममता की पराकाष्ठा है।

मन का मैल

गन्दगी को साफ करने वाला साबुन
क्या कभी गन्दा हो सकता है
हाँ हो सकता है अगर वो
गन्दे कीचड़ में गिर जाये तो।

समझदार इन्सान उस साबुन को
गन्दे कीचड़ से निकाल कर
साफ पानी से धोकर काम में लेते हैं।

यह प्रतीक है उनकी बुद्धिमानी का
उनकी व्यवहारिकता और ज़रुरत का
इससे यह भी साबित होता है कि
वह कितने निर्मल और पवित्र हैं।

नासमझ इन्सान उस साबुन को
गन्दे कीचड़ से नहीं निकाल कर
सड़ने और गलने के लिये
मज़बूर और लाचार कर देते है
और साबुन की मूल प्रवृति को
नष्ट और विकृत कर देते हैं।

इसी तरह से
इन्सान के दिल और दिमाग़

तन और मन को प्रसन्नचित रखते हैं
अगर वो बुरी संगत में चले जाये तो
इन्सान की ज़िन्दगी को तबाह कर देते हैं

मगर समझदार इन्सान प्रायश्चित कर
चिन्तन और मनन से
अपने दिल और दिमाग़ को
निर्मल और पवित्र बना लेते है।
और अपने जीवन को ख़ुशहाल बना लेते हैं

मगर नासमझ इन्सान
कुन्ठा और नफ़रत से
अपने जीवन को नर्क बना लेते है
और बुरे विचारों से ज़िन्दगी को
सड़ा और गला कर तबाह कर लेते हैं।

हमारा बेटा

हमारी आँखों का तारा
हम सबका राज दुलारा
हमारी जाँ से भी प्यारा
ऐसा राजा बेटा हमारा।

चरित्र से तन औ मन दर्पण रहे
समाज सेवा के लिये अर्पण रहे
माता और पिता को समर्पण रहे
शूरवीर योद्धा मैदान में कर्ण रहे।

ख़ूबसूरत व्यक्तित्व गगन रहे
पढ़ने औ लिखने में मगन रहे
अन्याय के खिलाफ़ अगन रहे
बुराइयों का दिल में दमन रहे।

हमारी आशाओं की वही एक आस रहे
हमारे जज़्बातों का उसको अहसास रहे
घर व परिवार के लिये वो विश्वास रहे
हमारे आदेश उस के लिये अरदास रहे।

उसके ख़्वाबों व ख़यालों में आसमान रहे
असहाय और गरीबों के लिये भगवान रहे
प्यार और मुहब्बत में ही उसका ईमान रहे
उसके दिलो दिमाग़ में सच्चा इन्सान रहे।

सारे जग में हमारा नाम रोशन करेगा
हमें खिलाने के बाद ही भोजन करेगा
परमपिता ईश्वर का रोज भजन करेगा
हमारी ख़ुशी के लिये वह जश्न करेगा।

वतन का गबरू-मगरूर जवान बनेगा
हिन्दुस्तान के लिये हमारी शान बनेगा
हमसब के लिये तो वो अभिमान बनेगा
चाहने वालों के दिल में अरमान बनेगा।

वतन में उसका स्वाभिमान बना रहे
ख़ुशियों से महकता जहान बना रहे
धन और दौलत से धनवान बना रहे
हँसता औ खेलता खानदान बना रहे।

निराशा और हताशा में आशावान रहेगा
ज़रूरतमंदों के लिये वो मेहरबान रहेगा
दर्द औ ग़म के लिये तीर कमान रहेगा
हम सबको उसके ऊपर अभिमान रहेगा।

हमारी जाँ से भी प्यारा
हमारी आँखों का तारा
हम सबका राजदुलारा
ऐसा प्यारा बेटा हमारा।

विदाई गीत

मेहनत और ईमानदारी से
हम सब पर उसका राज़ रहा
सारे ऑफिस के लिये वह
सुरीला संगीत और साज़ रहा

नेक इरादों से हम सबके साथ
हिल-मिलकर दिल में रहा
हम सबके साथ प्यार-मुहब्बत में
गुलाब की तरह से रहा

पाक़-दामन दिल और दिमाग़ से
हमारे लिये मगरूर रहा
गिले और शिक़वे
शक़ शिक़ायत से हमेशा दूर रहा

हम सबकी सुनकर भी वह
हम सब से 'कूल-कूल' रहा
सबका काम करने के लिये
हमारे साथ 'फेविकोल' रहा

हम सब के ख़यालों में
उसके अहसास का सागर रहा
फिर कहाँ और कैसे विदेश में
सात समन्दर पार रहा

हम सबकी यादों में
महकते हुये गुलशन की तरह रहा
समन्दर में पानी और फूलों में
ख़ुश्बू की तरह से रहा

अपनेपन से बरसों तक
उसका प्यार हमारे साथ रहा
उससे जुदाई का ज़ालिम व
तन्हा वक़्त हमारे साथ रहा

ईश्वर की रहम और करम
हमेशा उसके पास रहेगी
सहपरिवार उसकी ख़ुशी की
हमारे दिलों में दुआ रहेगी।

माँ की ममता

मुझे बहुत अच्छी तरह से याद है
वह पीड़ा और कष्टदायक दिन
जब मैं गर्भवती थी
मुझे मेरी दिनचर्या में
कितनी असुविधा होती थी
मेरे सारे के सारे परिजन
मेरी सुख और सुविधा का
कितना ध्यान रखते थे
मुझे महँगी दवाई देते थे
रोज पौष्टिक आहार देकर
मुझे हर तरह से
स्वस्थ और निरोगी रखते थे
ताकि मैं हष्ट और पुष्ठ
स्वस्थ और सुन्दर बच्चे को
आसानी से जन्म दे सकूँ

मुझे बेहद अफ़सोस
और मलाल होता है
उस असहाय, लाचार, बेबस
बेज़ुबान, अनाथ और बेसहारा
निर्बल कुतिया को देखकर
जो गलियों में घुमती रहती है

जो इस वक़्त गर्भवती है
और उसे कुछ ही दिनों में
असहनीय प्रसव पीड़ा होने वाली है
इसलिये मैं उस बेबस कुतिया की
नियमित निगरानी करती हूँ
हर रोज देखभाल कर
बेज़ुबान कुतिया से परिचित रहती हूँ
रोज सुबह और शाम
दूध और रोटी खिलाती हूँ
ताकि वह भी मेरी तरह
असहनीय प्रसव क्रिया को
आसानी से सम्पन्न कर सके

मुझे बहुत अच्छी तरह से
यह अहसास रहता है कि
गर्भवती होना क्या होता है
कितनी अधिक कठिनाईयाँ
और पीड़ा सहन करनी पड़ती है
क्योंकि मैं एक माँ हूँ
और मैं एक औरत भी हूँ
मैं अच्छी तरह से समझ सकती हूँ
गर्भ में नौ माह तक
किसी जीव का सृजन कैसे होता है
माँ की ममता और प्रसव पीड़ा
सब में एक समान होती है
चाहे वह जानवर हो या इन्सान
माँ सिर्फ माँ होती है
वह जगत जननी होती है
चाहे वह जानवर ही क्यों न हो।

रिश्तों का अहसास

इन रिश्तों में ऐसा अहसास होता है

माँ के लिये ममता का प्यार होता है
एक पिता के लिये ज़िम्मेदार होता है
भाई व बहन के लिये ऐतबार होता है
पति औ पत्नी के लिये क़रार होता है

इन रिश्तों में ऐसा अहसास होता है

जीजा और साली के लिये मजेदार होता है
देवर व भाभी में क़शिश का ख़ुमार होता है
ननद और भाभी में राज की दीवार होता है
प्रेमियों में सतरंगी सावन की बहार होता है

इन रिश्तों में ऐसा अहसास होता है

अपनों की तौहीन से बेगाना होता है
प्यार और मुहब्बत से आशना होता है
चाहत औ क़शिश में दीवाना होता है
मुसीबत में साथ तो दोस्ताना होता है।

गान्धारी की बेबसी

माँ की ममता किस तरह
बेबस व लाचार हो जाती है
अधर्मी दुर्योधन के लिए
रक्षा का कवच व औजार हो जाती है।

बेहद अफ़सोस व मलाल है उसको
द्रोपदी की इज़्ज़त व आबरू का
रस्मों और रिवाज़ों की तहज़ीब
उसके लिए अत्याचार हो जाती है।

अपने पति के जज़्बात और अहसास
अच्छी तरह से समझने के लिए
जानबूझकर हमेशा के लिए
अन्धकार का शिकार हो जाती है।

बुझदिल कायर भाई का
एक तरफ साज़िशों का प्रतिशोध है
दूसरी तरफ कुंठित पुत्र मोह में जकड़ा
अतिमहत्वाकाँक्षी अधर्मी पति है
इन दोनों रिश्तों की वज़ह से
उसके जीवन व कौरव कुल को
अपमानित करने में मददगार हो जाती है।

पत्थर दिल ज़ालिम कलेजा भी
पिघल कर मोम हो जाता है

अगर किसी के सौ पुत्रों का
उसके सामने नरसंहार हो जाये तो
फिर असहाय और मज़बूर भी
प्रतिशोध लेने को तलबगार हो जाती है।

अन्धे होने का प्रण लेने से
पतिव्रता धर्म का निर्वाह करने से
स्वर्ग में हक़ से निवास करती
एक पल के लिए आँखों से
धर्म का बन्धन हटा लेने से
जीवन भर की त्याग व तपस्या
एक ही क्षण में बेकार हो जाती है
और एक पल में नर्क की भागीदार हो जाती है।

ग़रीबी की आत्म-कथा

मेरे घर और परिवार में दुखों के
चमकते हुए सूरज का प्रकाश है
मेरे घर और आँगन में पूनम के
चाँद की ख़ुशियों का घना अन्धेरा है

आँसुओं की रिमझिम बारिश से
सींचित और आबाद होकर
बेकारी की ख़ुशबू से महकता हुआ
सतरंगी और हरियाला सावन है

मेरे घर और आँगन के आस-पास
बदहाली का घन घोर जंगल है
तौहीन और ज़लालत के तानों से
मेरा तन-मन ज़ख्मी होकर बेहाल है

महँगाई के शूल और काँटों से
ज़िन्दगी की ज़रूरतें लहूलुहान है
शोषण और अन्याय के जुल्मों से
बिना हाथ और पैर का मेरा संसार है

मेरी वफ़ा, ईमानदारी और मेहनत
भरे हुए पेट को और भरती है
मेरी आत्मा भूखी प्यासी रह कर
रहमो-करम की इन्सानियत से
ज़िन्दा रहने लायक़ पेट भरती है

हाथों में आस्था की बेड़ियाँ है
पैरों में धर्म की जन्ज़ीरें है
विश्वास में रस्मो-रिवाज़ो के ख़न्ज़र हैं
अहसान के बन्धनों में बन्ध कर
मेरी ज़िन्दगी नर्क से भी बदतर है

मेरे पैर बिना जूते और चप्पल के
पत्थर जैसे सख़्त और मज़बूत हैं
मगर मेरा बदन कर्कस काया है
गरज-गरज कर बरसते हुये
अभावों के घनघोर बादलों में
खुले आसमान का साया है

मेरे ख़स्ताहाल घर और आँगन में
महकते हुए कष्टों की ऐसी माया है
मेरा बदन मैले और जर्ज़र
तार-तार चिथड़ों से लिपटा हुआ है

मेरे रूखें और सूखे उलझे हुये बालों में
बरसों से तेल और कंघी का
नामो-निशान तक नहीं है
मेरी कुरूप काया मटमैली और काली है

मेरे बेबस चेहरे पर हर वक़्त
बेरहम उदासी की ख़ुश्बू महकती है
चिन्तायें भूखी प्यासी चिड़िया की तरह
बेचैन और मज़बूर होकर चहकती है

मेरे दामन में भविष्य की अनिश्चितायें
विनाश और दरिद्रता का रूप लेकर
दिन और रात ताण्ड़व नृत्य करती है
समन्दर के जैसी विशाल भूख की लहरें
रूखी सूखी रोटियाँ खाने को मचलती है

निराशाओं के साम्राज्य में क़ैद आशायें
ज़िन्दा लाश की तरह होकर
आज़ाद होने को तरसती हैं
हाड़ तोड़ मेहनत, दया और भीख
मेरे मज़बूर जीवन-यापन के लिए
एक मात्र आय के साधन हैं

मेरे खण्डर घर और परिवार में
अभावों की नग्नता का नंगा नाच है
खुले आसमान की सर्द रातों में
फुटपाथ पर मेरे जीवन का सवेरा है

क़र्ज़दार बाप-दादा के साथ
क़र्ज़ के दलदल में बसेरा है
आग उगलती गर्मियों में
नंगे पैर पत्थर का बिछौना है

तौहीन व ज़लालत को सहना
मेरे लिए ईश्वर के वरदान हैं
बदक़िस्मती मेरे गहने और आभूषण हैं
असहाय और बेसहारा होकर
दिन और रात आँसू बहाना
मेरी क़िस्मत की नीयती है

जी हाँ में ग़रीबी हूँ
जी हाँ में ग़रीबी हूँ
जी हाँ में ग़रीबी हूँ
आँसुओं की स्याही से
दुख और दर्द की कलम से
अभावों के काले काग़ज़ पर
बेबस और मज़बूर हाथों से
बेचैन होकर लिखी हुई
यह मेरी आत्म-कथा है
जी हाँ में ग़रीबी हूँ
जी हाँ में ग़रीबी हूँ।

वैश्या एक सम्पूर्ण औरत

बच्चा इतना बदनसीब है कि
उसे अपने पिता का नाम मालूम नहीं
और माँ इतनी बेबस और लाचार है कि
अपनी अभागन सूनी माँग में
सुहाग का सिन्दूर भर नहीं सकती

और हवस में ख़ुदग़र्ज़ बाप को तो
यह अहसास भी नहीं है कि
कोई उसके वंश का वारिस भी है
जो लाश की तरह से ज़िन्दा है
जिसका मासूम बचपन असहाय होकर
बदनाम बस्ती में तड़प-तड़पकर
बेरहमी से दफ़्न हो रहा है
बाप का तो अपने तन-मन की
वासना शान्त करने का
एक मात्र मक़सद था

रिश्तों की ये कैसी विचित्र विड़म्बना है
ख़ून के सम्बन्धों के साथ ज़माने का
कैसा बेरहम जुल्म और सितम है
एक औरत लाचारी और मज़बूरी में
हताश, निराश और असहाय होकर

ज़िन्दा रहने व जीवन यापन के लिये
अपने बदन का सौदा करती है

ज़ालिम ज़माने की बदनीयत से
बेबस,मज़बूर और लाचार होकर
उस दल-दल में कदम रखती है
जहाँ से निकलना नामुक़िन है

माँ की ममता से मज़बूर होकर
ज़ालिम ज़माने के ज़ुल्म बर्दास्त करके
बिना बाप के अभागे बच्चे को जन्म देकर
उसका पालन-पोषण ज़िम्मेदारी से करती है

अपने तन को बेचती है मन को नहीं
बेशक़ उसकी भी ख़्वाहिशें और तमन्नायें हैं कि
उसका भी छोटा सा घर और परिवार हो
विश्वास में करवा चौथ का त्यौहार हो

सतरंगी बसन्त में सावन का सोमवार हो
होली और दीपावली की ख़ुशियों में
उमंगों से भरा पावन उपहार हो
मगर जीवन में तो ख़ुशियों का अन्धकार है

बदनाम बस्ती में ख़ामोश निग़ाहों से
तन और मन में उफनता हा-हाकार है
बेबसी और लाचारी की चिता पर
जलता हुआ सपनों का सम्पूर्ण संसार है

तन-मन में श्मशान जैसा सन्नाटा है
ज़िन्दगी धुआँ-धुआँ होकर राख का ढेर है
फिर भी लाश की तरह ज़िन्दा रहकर
जीने के लिए बेबस, मज़बूर और लाचार है।

मैं कौन हूँ

वह कौन है
जो मुझे ये बतायेगा कि
मैं कौन हूँ
मैं तो वह भी नहीं हूँ
जो कि मैं होता हूँ
अक़्सर मैं वह भी होता हूँ
जो कि मैं कभी नहीं होता

जिस ईश्वर ने मुझे बनाया
यक़ीनन वह भी नहीं बता सकता
कि मैं कौन हूँ
क्योंकि ईश्वर भी
बेहद मलाल में है कि
मैं इन्सान की शक़्ल में
कभी हैवान और शैतान हूँ
तो कभी ख़ूँखार दरिन्दा
तो कभी हवस का पुजारी
तो कभी इन्सानियत का हत्यारा
तो कभी अस्मत का लुटेरा
तो कभी ना कुछ फ़ायदे के लिये
देश का करोड़ों का नुकसान
करने वाला देशद्रोही

तो कभी रिश्वतखोर
तो कभी भ्रष्टाचारी
मगर मेरी नाज़ायज़ ज़रूरतें
यह बता देती है कि
मैं कितना ख़ुदग़र्ज़ इन्सान हूँ

कभी मुझे ये गरूर होता है कि
मैं एक शायर व कवि हूँ
जब मुझे यह पता चलता है कि
कवि और शायर तो
तुलसी, मीर, ग़ालिब, कबीर
अमीर ख़ुसरो और निराला है
तो मेरा यह भ्रम भी
टूट कर चूर-चूर हो जाता है

मेरा महबूब समझता है कि
मैं उसकी मुहब्बत हूँ
मेरे माता-पिता समझते हैं कि
मैं सिर्फ़ उनका बेटा हूँ
मेरे बच्चे समझते हैं कि
मैं सिर्फ़ उनका पिता हूँ
मेरी पत्नी समझती है कि
मैं सिर्फ़ उसका पति हूँ
मेरे भाई-बहन समझते हैं कि
मैं सिर्फ़ उनका भाई हूँ
मेरे दोस्त समझते हैं कि
मैं उनके दुख-सुख का साथी हूँ
जब मैं औरों के लिये

इतना कुछ हूँ तो
फिर अपने लिये क्या हूँ

ऐसा नहीं है कि
मैं निर्विवाद हूँ
जीवन में कई विवादों से
मेरा वास्ता रहा है
मेरे बहुत सारे दुश्मन हैं
मैं किसी के लिये अपराधी हूँ
तो किसी के दिल का गुनहगार हूँ

वक़्त बहुत बलवान है
वक़्त ज़रूर बता सकता है कि
मैं कौन हूँ
वक़्त से फ़रिश्ते भी
परास्त हो जाते हैं
वक़्त ही अच्छे बुरे की
पहचान कराता है
इस पहचान से ही
यह पता चलता है कि
आख़िर में मैं कौन हूँ

मेरा सवाल अभी भी
रहस्यमय सवाल है कि
आख़िर मैं क्या हूँ
मैं क्या हूँ
यह खोज करने की
अनवरत जीवन यात्रा

सारे जीवन भर चलती रहेगी
फिर भी मैं यह साबित नहीं
कर पाऊँगा कि
आख़िर में मैं क्या हूँ
आख़िर में मैं कौन हूँ।

ममता की महिमा और महानता

इस तरह से आप ख़ुशहाल व ख़ूबसूरत संसार हो

तन व मन के सुन्दर उपवन हो
आँगन में महके हुए गुलशन हो
कायनात में ख़ुशबू के चमन हो
बसन्त और सावन की पवन हो

इस तरह से आप परिवारजनों के लिये बहार हो

परिवार में ख़ूबसूरत अहसास हो
संसार में ख़ुशियों का प्रवास हो
बसंत का रंग बिरंगा मधुमास हो
ज़िन्दगानी में सतरंगी आभास हो

इस तरह से आप घर व परिवार में असरदार हो

दिलों में रिश्तों की कल्पना का मन्थन हो
सम्बन्धों के हृदय स्पर्शी प्रेम का चिन्तन हो
गीतों में सात सुरों के संगम का बन्धन हो
मन वीणा में संगीत के सुरों का गुन्जन हो

इस तरह से आप दिल और दिमाग़ में ऐतबार हो

जीवन की हर बात व हालात के राज़दार हो
तन व मन के दुख और सुख के समाचार हो
जीवन में ख़ुशहाली व संपन्नता का विचार हो
घर औ परिवार में सद्भावनाओं का प्रसार हो

इस तरह से आप सम्बन्धों के घर और परिवार हो

ज़रूरतों के हम दर्द ख़यालात हो
जीवन की पहली के सवालात हो
ज़हन की क़ैफ़ियत के जज़्बात हो
रिश्तों में अपनेपन की मुलाक़ात हो

इस तरह से आप घर और परिवार में समझदार हो

पल-पल की भूख प्यास का अहसास हो
सुखद औ सुनहरे भविष्य का आभास हो
दिनचर्या के दिन व रात का विश्वास हो
ममता के आँचल में बचपन का प्रवास हो

इस तरह से आप सारी कायनात में पवित्र इक़रार हो

जगत-जननी की अहमीयत का जहान हो
रस्मों व रिवाज़ों में संस्कारों का विधान हो
महानता औ बलिदान के लिये अभिमान हो
सहनशीलता में धरती माँ जैसा वरदान हो

इस तरह से प्यार और ख़ुशियों का निर्मल क़रार हो

ख़ुशियों और उमंगों का तीज-त्यौहार हो
दुख-सुख में साथ निभाने का विचार हो
सुख और शान्ति की देवी का अवतार हो
हर ज़रूरतों के लिये घर और परिवार हो

इस तरह से आप ज़माने के लिये समझदार हो

दिल और दिमाग़ में मान और सम्मान हो
इज्ज़त-आबरू के लिए मन में अरमान हो
कायनात की सारी परेशानी का निदान हो
समाज की ख़ुशहाली के लिए संविधान हो

इस तरह से आप दुनिया के लिये ख़ुशगवार हो

घर व परिवार की पालन हार हो
रिश्तों की ख़ुशियों का आधार हो
जीवन में इन्सानियत का प्यार हो
सुन्दर आशियाने की कलाकार हो

इस तरह से आप तन और मन से ईमानदार हो

अधूरे सपनों को सफल करने वाले अरमान हों
मान व सम्मान के लिये ज़माने में कीर्तिमान हो
संस्कृति औ संस्कार के लिए घर का ईमान हो
सुख, शान्ति व समृद्धि में ख़ुशियों की खदान हो

इस तरह से आप संसार के लिये नमस्कार हो

दुख और दर्द में सहारे की कामना हो
निर्मल व पवित्र तन मन की भावना हो
अजनबी रिश्ते निभाने की आराधना हो
मेहनत औ वफ़ा की साकार साधना हो

ऐसी निर्मल और पवित्र भावनाओं के साथ ममता की महिमा
और महानता के देवीय रूप को सत्-सत् नमन् और सादर प्रणाम्।

अन्नदाता की दास्तान

इस देश का किसान जिसे कहते है अन्नदाता
जिसकी ऐसी है दुख औ दर्द भरी जीवनगाथा

ज़मीनें किसानों के लिये पूजनीय धरती माता है
जो किसानों की क़िस्मत के लिये भाग्य विधाता है
सारी मुसिबतें बर्दाश्त करके क़िस्मत आजमाता है
सारे दुख-दर्द भूल कर मस्ती के गीत गाता हुआ
मेहनत से बन्जर ज़मीन में भी फ़सलें उपजाता है

जन्मों से कर्ज़ के दल-दल में घर व परिवार है
अन्नदाता होकर भी भिखारी की तरह लाचार है
सहन नहीं होते ज़ालिम ज़ुल्म और अत्याचार है
अब अन्नदाता की यही बेबस व निर्मम पुकार है
सिर्फ़ बेरहम ख़ुदकुशी ही अब तो मेरे उपचार हैं

इस देश का किसान जिसे कहते है अन्नदाता
जिसकी ऐसी है दुख औ दर्द भरी जीवनगाथा

ख़यालों में चिंताओं की चिंगारियाँ हैं
अंग-अंग पे बदहाली की बदलियाँ हैं
तन-मन पर बर्बादी की बिजलियाँ हैं
जानलेवा ग़मों के आँधी व तूफ़ान में
किसानों की ख़ौफ़ज़दा ज़िन्दगियाँ हैं

हर रोज़ ख़बरों में आत्महत्या की चर्चा है
साहूकारों के ब्याज का बेहिसाब कर्ज़ा है
जन्म-जन्म से बंधुआ मज़दूर का दर्ज़ा है
घर की रोज़मर्रा की ज़रूरत के लिये भी
ज़मीनों का गिरवीनामा जीने का खर्चा है

ज़िन्दगी की शतरंज में शकुनी का पासा है
समन्दर में बारिश और रेगिस्तान प्यासा है
परमपिता ईश्वर के रूप में ऋषि दुर्वासा है
कर्ज़ रूपी केन्सर से किसानों के ईलाज को
राजनैतिक आश्वासनों का मक्कार झाँसा है

अत्याचारी ज़ालिम सूखे औ अकाल
मूसलाधार व विनाशकारी बारिश से
खेत में खड़ी फ़सलें तबाह होने पर
कर्ज़ों के लिये मारा-मारा फिरता है
कभी-कभार अधिक फ़सल होने पर
बेचने को दर-दर भटकता रहता है

आँसू बहाते हुये परिवार की भूख औ प्यास है
खोखली हड्डियों में बूढ़े माँ-बाप की साँस है
जवाँ कुँआरी बहन-बेटी के विवाह की आस है
लाचार, हताश और निराश बेरोजगार बच्चों का
नहीं अपने मज़बूर माँ और बाप पर विश्वास है

इस देश का किसान जिसे कहते है अन्नदाता
जिसकी ऐसी है दुख औ दर्द भरी जीवनगाथा

हाड़ माँस को गलाती सितमग़र सर्दियाँ हैं
बदन को जलाती आग उगलती गर्मियाँ हैं
बरसाती औ तूफ़ानी बारिश की आँधियाँ हैं
जान लेवा मौसमी बीमारियों से रोग-ग्रस्त
जर्ज़र व ख़स्ताहाल होती हुई झोंपड़ियाँ हैं

होली की ख़ुशियाँ बदरंग हैं
दीपावली कंगाली के संग है
जीवन फटा हुआ सा चंग है
ज़िन्दगी बिना सुर व ताल के
टूटे तारों से साज व तरंग है

ज़मीन को जख़्मी करते ये बेमौसम के ख़न्ज़र हैं
सावन के मौसम में बदहाल पतझड़ के मन्ज़र हैं
ख़ून पसीने से सिंचाई करके भी ज़मीनें बन्ज़र हैं
ज़मीदार, सरकार, सेठ और साहूकारों की नज़रों में
मेहनती किसान लूटेरे,चालाक, बेईमान व कन्ज़र हैं

इस देश का किसान जिसे कहते हैं अन्नदाता
जिसकी ऐसी है दुख औ दर्द भरी जीवनगाथा

पत्नियों को पीहर से मिले सुहाग के गहने बिक गये
परिवारों के आँगन मातम और शमशान में बदल गये
होनहार बच्चों के मासूम अरमाँ बेरहमी से कुचल गये
बेबस औ लाचार किसान मज़बूरी में नशे की लत से
हताशा-निराशा में मानसिक रोगी हो कर बहक गये

क़र्ज़ माफी के मरहम से जख़्मी किसान बेचारा है
ख़ुदकुशी का मुआवजा भी ऊँट के मुँह में जीरा है
परिवारों का चिराग़ बुझने से अन्धेरा ही अन्धेरा है
बिना मुखिया के लावारिश परिवार असहाय होकर
दुख व ग़म से मुसीबत के बुरे वक़्त में बेसहारा है

किसान की ज़िन्दगी सूखे औ अकाल की रहस्यमय पहेली है
जो सुनसान सर्द रातों में बेबस और बेचैन हो कर अकेली है
मानसून के ज़ुल्म सहकर किसान की ज़िन्दगी भी सौतेली है
बेज़ान कन्धों पर ज़िन्दगी को लावारिश लाश की तरह ढोकर
ज़िन्दगी रोज़ाना मर मरकर दर्दनाक मौत की बेरहम सहेली है

अन्नदाता की यही बेबस व निर्मम पुकार है
बेरहम ख़ुदकुशी ही अब तो मेरा उपचार है।

नववर्ष की शुभकामनायें

इस तरह की सद्भावनाओं से
हम सभी साथी मिल कर करें
नववर्ष का हार्दिक सुस्वागतम्
नववर्ष का मधुरतम् अभिनन्दन

हमारे दिल और दिमाग़ में निर्मल विचार रहे
ख़ुशियों से आबाद हमारे घर औ परिवार रहे
तन व मन में सावन व बसन्त की बहार रहे
हमारा आचरण पवित्र भावना का व्यवहार रहे

इस तरह की सद्भावनाओं से
हम सभी साथी मिल कर करें
नववर्ष का हार्दिक सुस्वागतम्
नववर्ष का मधुरतम् अभिनन्दन

हमारा वतन मधुर भाईचारे से ख़ुशहाल रहे
हम सब सुख और शान्ति से मालामाल रहे
हमारे मन में इंसानियत के लिए सवाल रहे
अनजानी ग़लतियों के लिए हमें मलाल रहे

इस तरह की सद्भावनाओं से
हम सभी साथी मिलकर करें
नववर्ष का हार्दिक सुस्वागतम्
नववर्ष का मधुरतम् अभिनन्दन

सारे जहान में हिन्दुस्तान का मान औ सम्मान रहे
वतन की हिफाज़त के लिए दिलों में बलिदान रहे
सहयोग की भावनाओं के लिए मन में अभिमान रहे
हँसी मजाक की शरारतों में बच्चे जैसा नादान रहे

इस तरह की सद्भावनाओं से
हम सभी साथी मिल कर करें
नववर्ष का हार्दिक सुस्वागतम्
नववर्ष का मधुरतम् अभिनन्दन

पड़ौसी हमारे दिल-दिमाग़ में भगवान रहे
समाज का कामकाज दीन और ईमान रहे
शहद से भी मधुर हम सब की ज़ुबान रहे
एक दूसरे के लिए दिल में स्वाभिमान रहे

इस तरह की सद्भावनाओं से
हम सभी साथी मिल कर करें
नववर्ष का हार्दिक सुस्वागतम्
नववर्ष का मधुरतम् अभिनन्दन

शजर के चिन्तन जैसी हमारी कामना रहे
दरिया की रवानी जैसी हमारी भावना रहे
नील-गगन की ओर दुआ और प्रार्थना रहे
चराग़ की तरह रोशन होने की साधना रहे

इस तरह की सद्भावनाओं से
हम सभी साथी मिल कर करें
नववर्ष का हार्दिक सुस्वागतम्
नववर्ष का मधुरतम् अभिनन्दन

हम सभी तन और मन से स्वस्थ और निरोगी रहे
सद्गुरुओं के साथ दिल व दिमाग़ से सतसंगी रहे
वतन की हिफाज़त में सीना फौलादी औ जंगी रहे
प्यार-मुहब्बत हमारे दिल औ दिमाग़ में सतरंगी रहे

इस तरह की सद्भावनाओं से
हम सभी साथी मिल कर करें
नववर्ष का हार्दिक सुस्वागतम्
नववर्ष का मधुरतम् अभिनन्दन

होली-दीपावली की उमंगों का त्यौहार रहे
तहजीब में रस्मों औ रिवाज़ों का विचार रहे
मन्दिर जैसा निर्मल और पवित्र परिवार रहे
सिर पर बुज़ुर्गों का आशीर्वाद औ प्यार रहे

आप सबको ऐसी मंगल-कामनाओं सहित
नववर्ष की बहुत-बहुत हार्दिक शुभकामनायें
जय हिन्द, जय हिन्द, जय हिन्द, जय हिन्द।

विदाई की शुभकामनायें

आपके दिल में हर वक़्त ऐसा अहसास रहा

आप के साथ हर वक़्त अपनेपन का व्यवहार रहा
आपस में मिल-जुलकर ख़ूबसूरत सा संसार रहा
एक दूसरे के दुख-दर्द में आपस का ऐतबार रहा
अपनेपन से इस तरह रहे कि घर व परिवार रहा

आपके तन और मन में ऐसी पवित्र दुआयें रही

सहयोग और सहकारिता की दिल में भावना रही
सबके उज्ज्वल भविष्य के लिये शुभ कामना रही
सभी स्वस्थ-निरोगी रहें ऐसी मन में कामना रही
सब सुखी व प्रसन्न रहें ऐसी दिल में प्रार्थना रही

आपके रोम-रोम में ऐसी निर्मल सोच रही

कर्म ही पूजा हमेशा के लिये आराधना रही
कोई परेशान नहीं हो विचार में साधना रही
संयम व सहनशीलता दिल में उपासना रही
सभी प्रगति करते रहें ऐसी मनोकामना रही

आपके जीवन में हमेशा ऐसा सदाचार रहा

छोटों के लिये हर वक़्त मन में प्यार रहा
बड़ों के लिये हमेशा दिल में सत्कार रहा
हमेशा बच्चों के लिये दिल में दुलार रहा
एक सबके लिये सब एक का विचार रहा

आपके लिये हमारी दिल की तमन्नाओं में

परमपिता परमेश्वर का आपके ऊपर साया रहे
स्वस्थ और निरोगी आप की कन्चन काया रहे
आशियाने में निरंतर बरसती धन की माया रहे
साधन-सम्पन्न घर में ख़ुशियों का सरमाया रहे

आपके लिये हमारी मन की मुरादों में

जीवन में सावन औ बसंत का मधुमास रहे
परिवारजनों का हर हालात में विश्वास रहे
निर्मल और पवित्र जज़्बात के अहसास रहे
दिल व दिमाग़ में भाईचारे का विश्वास रहे

आपके लिये हमारी दिल की ख़्वाहिशों में

आपके ख़्वाबों व ख़यालों का आकार रहे
सच होते हुये सपनों का मन में विचार रहे
बुजुर्गों के आशीर्वाद का दिल में प्रसार रहे
समाज सेवा का तन और मन में संचार रहे

आपके लिये हमारी दिल की दुआओं में

आपके आँगन में अम्न और चैन का निवास रहे
आपके परिवार में सुख और शान्ति का वास रहे
आपके तन-मन में समृद्धि-ऐश्वर्य का प्रवास रहे
आपके जीवन में मान औ सम्मान का प्रकाश रहे

इस तरह के अहसास और जज़्बात से
आपके जीवन में शुभकामनायें बेशुमार रहें।

शुभकामना सन्देश

ऐसी भावनायें आपके जीवन में गुना हज़ार रहे

आप के जीवन में ख़ुशियाँ बेशुमार रहे
दिल औ दिमाग़ से कभी न बेज़ार रहे
परिवारजनों के दिल में बेहद प्यार रहे
सुनहरे भविष्य को आपका इंतज़ार रहे।

आपके जीवन में जज़्बातों की ऐसी बहार रहे

तमाम उम्र के लिये तन व मन में ईमान रहे
आपके निर्मल दिलो दिमाग़ में भगवान रहे
आपके जीवन का सारे जहान में सम्मान रहे
आपके दिल में इन्सानियत का इत्मीनान रहे।

आपके निर्मल व पवित्र जीवन के ऐसे विचार रहे

स्वस्थ और निरोगी आपकी कंचन काया रहे
निरन्तर आती हुई आपके दामन में माया रहे
शान औ शौकत से ज़िन्दगी का सरमाया रहे
माता-पिता के आशीर्वाद का हमेशा साया रहे।

आपके जीवन में ऐसी कामना सदाबहार रहे

आपके दिल दिमाग़ में हमेशा प्यार बरकरार रहे
जन्मों-जन्मों तक ख़ुशियों से रहने का क़रार रहे
परिजनों की मुहब्बत का बेसब्री से इन्तज़ार रहे
ख़ूबसूरत अहसास की तन औ मन में बहार रहे।

आपके जीवन में इस तरह का ऐतबार रहे

ख़ुशहाल आशियाने में आपके परिवारजन हमेशा साथ रहे
बुरे वक़्त में हमेशा के लिये एक-दूजे के हाथों में हाथ रहे
हर एक दिन ख़ूबसूरत और हसीन ख़्वाबों के जज़्बात रहे
आपके जीवन में हमदर्दी और इंसानियत के ख़यालात रहे।

आपकी ज़िन्दगी में इस तरह से क़रार रहे

पल-पल में आपको ख़ुशियों के अहसास रहे
परिजनों के दिल में हर हाल में विश्वास रहे
चाहत, क़शिश औ मिलन की मन में आस रहे
दोस्तों के हर पल साथ रहने का आभास रहे।

आप इस तरह से जीवन में समझदार रहे

परिवार जनों का प्यार आपको अमानत रहे
सारे परिवार की ग़लतियों की ज़मानत रहे
आपके दिल दिमाग़ में भाईचारा ईबादत रहे
आपकी ज़िन्दगी का पवित्र सफ़र ज़ियारत रहे।

आप जीवन में इस तरह से वफ़ादार रहे

वतन को महफ़ूज़ रखने को ज़माने से अदावत रहे
परिजनों के लिए सारी कायनात से भी बग़ावत रहे
रिश्तेदारों के लिए आप में हमदर्दी औ शराफ़त रहे
आपसी परेशानी व ज़रूरत के लिये इन्सानियत रहे।

आप तन और मन में इस तरह से ईमानदार रहे

आप का परिवार ज़माने के लिए मिसाल रहे
घर व परिवार के संबन्ध दिलों में कमाल रहे
तन औ मन पर प्यार की सतरंगी गुलाल रहे
वफ़ा औ ऐतबार से रोशन आपका ज़माल रहे।

आपकी ज़िन्दगी का सफ़र इस तरह से असरदार रहे

मुस्तक़बिल आप की तमन्नाओं का आफ़ताब रहे
ज़माने में सम्मान आपके जीवन का माहताब रहे
आप का सुनहरा भविष्य दुनिया में लाज़वाब रहे
कायनात में आप का परिवार क़ाबिले आदाब रहे।

आपके दिलो-दिमाग़ में ऐसे ख़यालात बेशुमार रहे

निर्मल और पवित्र आपके जीवन का सवाब रहे
अज़र और अमर आपके परिवार का ज़वाब रहे
दुख, दर्द और ग़म से बेख़बर आप बेहिसाब रहें
इज़्जत और आबरू से परिवार का हिज़ाब रहे।

हमारी शुभकामनाओं व दुआओं में ऐसा चमत्कार रहे

परमपिता परमेश्वर पर आपको सम्पूर्ण ऐतबार रहे
परिवार में पूरी होती हुई तमन्नाओं का संसार रहे
हमारी मनोकामना में आपका ख़ुशहाल परिवार रहे
हमारी ख़्वाहिशें व तमन्नायें ऐसी ही असरदार रहे।

इस तरह के अहसास और जज़्बात, ख़्वाबों और ख़यालों से हर दिन हमारी हार्दिक शुभकामनायें आपकी ज़िन्दगी में बेशुमार रहे।

बेज़ार=उदास, सरमाया=जमा पूँजी, ईबादत=प्रार्थना, ज़ियारत=तीर्थ यात्रा, अदावत= दुश्मनी, ज़माल=सौन्दर्य, आफ़ताब=सूरज, माहताब=चाँद, कायनात=संसार, सवाब= पुण्य, मुस्तक़बिल=मान-सम्मान, बेख़ुदी=अपने आप से बेख़बर, हिज़ाब=पर्दा, ऐतबार= विश्वास।